الصلوٰة والسلام علیک یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم

हयाते बरज़ख़ी, मसाइले तदफ़ीन व तकफ़ीन और नबीर-ए-आला हज़रत
व उस्ताज़े ज़मन हज़रत अल्हाज अश्शाह मुहम्मद उवैस रज़ा ख़ाँ क़ादरी علیہ الرحمہ
के हालात पर मुश्तमिल एक मुख़्तसर सा मजमूआ

मसाइले दारुल बक़ा

मअ़

तज़किरा-ए-उवैस रज़ा



मुरत्तिब

मुहम्मद सलीम बरेलवी

उस्ताज़ जामिया रज़विया मंज़रे इस्लाम

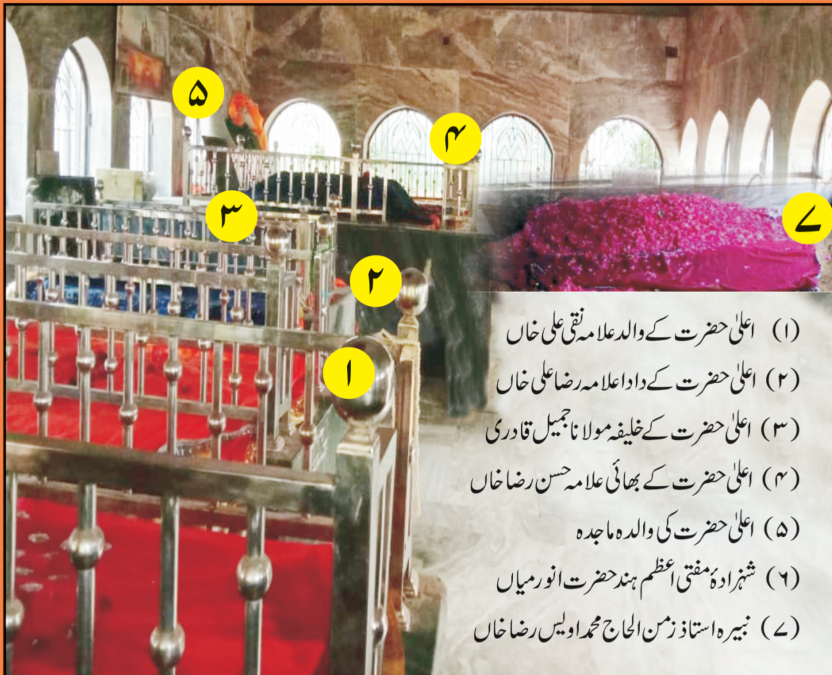
बराये ईसाले सवाब

नबीरा-ए-आला हज़रत व उस्ताज़े ज़मन हज़रत अल्लामा अल्हाज

मुहम्मद उवैस रज़ा ख़ाँ क़ादरी علیہ الرحمہ

पेशकश

मुहम्मद मोहसिन रज़ा ख़ाँ, मुहम्मद शुऐब रज़ा ख़ाँ
मुहम्मद मुज्तबा रज़ा ख़ाँ (अनीस मियाँ), अब्दुर्रशीद रज़ा ख़ाँ
मुहम्मद जुनैद रज़ा ख़ाँ, मुहम्मद ज़ुबैर रज़ा ख़ाँ





तुरबते मुबारक नबीरा-ए-आला हज़रत व उस्ताज़े ज़मन हज़रत अल्लामा अल्हाज
मुहम्मद उवैस रज़ा ख़ाँ क़ादरी علیہ الرحمہ

अर्ज़े मुरत्तिब

हामिदन व मुसल्लियन व मुसल्लिमन।

नवासा–ए–आला हज़रत और नबीरा–ए–उस्ताज़े ज़मन हज़रत अल्हाज अश्शाह मुहम्मद उवैस रज़ा ख़ाँ अलैहिर्रहमा के विसाल से दो रोज़ के बाद उनके शहज़ादे, आली जनाब मुहम्मद अनीस रज़ा ख़ाँ अनीस मियाँ साहब ने फ़ोन पर काफ़ी देर अपने वालिदे गिरामी अलैहिर्रहमा के ताअ़ल्लुक़ से बहुत कुछ बातें ब्यान फ़रमायीं साथ ही अपनी ख़्वाहिश का इज़हार फ़रमाया कि वालिदे गिरामी के ईसाले सवाब के लिए मौत व मय्यत और कफ़न दफ़न से मुताअ़ल्लिक़ आम फ़हम ज़रूरी मसाईल पर मुश्तमिल अगर एक मुख़्तसर सी किताब तैयार हो जाये तो उनके चालीसवें के मौक़े पर तक़सीम हो जायेगी और यह काम आपको ही करनाा है। हमारे रफ़ीक़ जनाब ज़ुबैर भाई साहब ने भी तक़रीबन इसी क़िस्म की फ़रमाईश का इज़हार फ़रमाया चूँकि उर्से रज़वी की तैयारियाँ शुरू हो चुकी थीं, जामिया रज़विया मंज़रे इस्लाम के तलबा का इम्तेहान भी क़रीब आ चुका था इसके अलावा राक़िम, हज़रत अल्लामा जाफ़र बिन जलालुद्दीन मुहम्मद मक़सूद आलम शाही अलैहिर्रहमा की लिखी हुई बुख़ारी शरीफ़ की अरबी शरह ***''अलफ़ैज़ुत्तारी फ़ी शरहे सहीहुल बुख़ारी''*** की तस्हीह व प्रूफ़ रीडिंग के काम में भी काफ़ी मसरूफ़ था मगर हज़रत उवैस मियाँ साहब और उनके शहज़ादों से राक़िम को जो ताल्लुक़े ख़ातिर और महब्बत व उनसियत है उसके पेशे नज़र इन तमाम मसरूफ़ियात के बावजूद इस किताब की तरतीब का राक़िम ने इन हज़रात से वायदा कर लिया और उर्से रज़वी के बाद बतारीख़ 21 अक्तूबर 2020 ई0 बाद नमाज़े मग़रिब अपने रफ़ीक़े कार, मुहिब्बे गिरामी आली जनाब मिर्ज़ा तौहीद बेग रज़वी साहब के साथ बैठकर और ज़ुबानी बोल कर यह किताब टाईप कराना शुरू कर दी जो अल्ह़म्दुलिल्लाह बतौफ़ीक़े इलाही बतारीख़ 22 अक्तूबर 2020 ई0 शाम तक मुकम्मल हो गयी फिर इस किताब की हिंदी करने का काम जनाब ज़ुबैर रज़ा ख़ाँ साहब और मिर्ज़ा तौहीद बेग रज़वी साहब ने 23 अक्तूबर सुबह 09 बजे से

शाम 04 बजे तक मुकम्मल कर दिया। उर्दू मैटर की तस्हीह़ हज़रत अल्लामा सय्यद कफ़ील अहमद हाशमी साहब, दारूल इफ़्ता मंज़रे इस्लाम ने की जबकि हिंदी मैटर की तस्हीह का काम फ़क़ीर राक़िमुल हुरूफ़ ने अंजाम दिया और असातज़ा–ए–मंज़रे इस्लाम से मशवरे के बाद इस किताब का काम ***''मसाईले दारूल बक़ा मआ तज़किरा–ए–उवैस रज़ा''*** तजवीज़ किया।

नेहायत उजलत में यह किताब तरतीब दी गयी है, ग़लतियों के इम्कानात अच्छे ख़ासे हैं। इसलिए अहले इल्म से ग़ुज़ारिश है कि अगर कोई ग़लती या ख़ामी निगाह में आये तो बराये करम मुरत्तिबे किताब को बराहे रास्त आगाह फ़रमायें।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इस रिसाले को शर्फ़े कुबूलियत अता फ़रमाये। साहिबे तज़करा ***अल्हाज अश्शाह मुहम्मद उवैस रज़ा ख़ाँ उवैस मियाँ अलैहिर्रहमा*** के दर्जात को बलंद फ़रमाये, ता क़यामत उनकी क़ब्र पर अनवार व रहमत की बारिशें नाज़िल फ़रमाये और ख़ानदाने आला हज़रत के बुज़ुर्गों के फ़ैज़ान से हम सब को मालामाल फ़रमाये। आमीन।

मुहम्मद सलीम बरेलवी

जामिया रज़विया मंज़रे इस्लाम, दरगाहे आला हज़रत बरेली शरीफ़

23 अक्तूबर 2020 ई0

आह! नबीरा–ए–उस्ताज़े ज़मन न रहे।

मुजाहिदे सुन्नियत, नबीरा–ए–आला हज़रत, हज़रत अल्लामा अल्हाज अश्शाह मुहम्मद मन्नान रज़ा ख़ाँ (मन्नानी मियाँ साहब) बानी व नाज़िम जामिया नूरिया रज़विया बाक़रगज व बानी नूरी मरकज़ दरगाहे आला हज़रत बरेली शरीफ़।

नबीरा–ए–उस्ताज़े ज़मन, माहिरे रियाज़यात, हज़रत अल्हाज मुहम्मद उवैस रज़ा ख़ाँ रमहतुल्लाहि तआ़ला अलैहि बिन मौलाना मुर्तज़ा रज़ा ख़ाँ बिन मौलाना मुहम्मद हुसैन रज़ा ख़ाँ बिन उस्ताज़े ज़मन हज़रत अल्लामा हसन रज़ा ख़ाँ रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि अजमईन डेढ़ माह की अ़लालत के बाद 18 सितम्बर 2020 ई0 मुताबिक़ 29 मोहर्रम उल हराम बरोज़ जुमा (शबे हफ़्ता 9 बजकर 45 मिनट पर) इस दारे फ़ानी से कूच फ़रमा गये। मौसूफ़ रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि बड़े मिलनसार, क़ौम व मिलत का दर्द रखने वाले, नेक सीरत और नेक तबाअ़ इंसान थे। पंज वक़्ता नमाज़ों की बाजमाअ़त पाबंदी करने वाले बा शरअ़ शख़्स थे। आपने हज्जे बैतुल्ला शरीफ़ की सआ़दत भी हासिल की और रौज़ए अनवर की ज़ियारत भी। आपने इसी साल (जनवरी 2020 में) पैदल चल कर उमरा भी किया। आप विसाल के वक़्त ख़ानदाने आला हज़रत में सब से ज़्यादा बुज़ुर्ग शख़्सियत के मालिक थे। आपकी उमर शरीफ़ तक़रीबन 87 साल थी। आपकी तदफ़ीन अपने आबाई मक़बरे ''सिटी क़ब्रस्तान'' में हुई। आला हज़रत रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु की वालिदा माजिदा के क़दमों में आपकी तदफ़ीन हुई। आपकी दायीं–बायीं तरफ़ आला हज़रत रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु के आबा व अजदाद के मज़ारात हैं। दरगाहे आला हज़रत के गेट के सामने जो गली है वहाँ आपकी नमाज़े जनाज़ा अदा की गयी। इसके बाद फ़क़ीर क़ादरी मुहम्मद मन्नान रज़ा ख़ाँ मन्नानी मियाँ ग़ुफ़ेरा लहु ने रिक़्क़त अंगेज़ दुआ की और नात शरीफ़ पढ़ी। मज़ारे आला हज़रत में तमाम लोगों ने मरहूम के लिये ईसाले सवाब किया। रब्बुल आलमीन! अल्हाज मुहम्मद उवैस रज़ा ख़ाँ रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि को आख़िरत में सुर्ख़ रूई अ़ता फ़रमाये। बेहिसाब मग़फ़िरत फ़रमा कर दर्जात बलंद फ़रमाये, पसमांदगान को सब्रे जमील अ़ता फ़रमाये आमीन।

दुआ गो

मुहम्मद मन्नान रज़ा ख़ाँ मन्नानी मियाँ

दरगाहे आला हज़रत बरेली शरीफ़

22 अक्टूबर 2020 ई0

आह! हमारे उवैस मियाँ

नबीरा–ए–आला हज़रत, क़ायदे अहले सुन्नत, पीरे तरीक़त, हज़रत अल्लामा अल्हाज अश्शाह मुहम्मद सुब्हान रज़ा ख़ाँ (सुब्हानी मियाँ) मद्दा ज़िल्लोहुन नूरानी।

साहिबे सज्जादा ख़ानक़ाहे आलिया क़ादरिया रज़विया बरेली शरीफ़।

हामिदन व मुसल्लियन व मुसल्लिमा!

वाक़ई यह साल 2020 ई0 पूरी दुनिया ख़ासकर हम मुसलमानों के लिये ''आमुल हुज़्न'' यानी दुखों भरा साल रहा। बहुत सारे ना तलाफ़ी नुक़सानात का सामना करना पड़ा, बाबरी मस्जिद का ग़म, मुसलमानों की जानों माल और इज़्ज़तो आबरू पर मंडलाते बेशुमार ख़तरात का दुख। इस पर मुस्तज़ाद यह कि अहले सुन्नत वल जमाअ़त की बहुत सी जलीलुल क़द्र हस्तियाँ भी हम से रूख़सत होकर अपने मालिके हक़ीक़ी से जा मिलीं। इन्ही दुखों के साथ ख़ास ख़ानवादए रज़विया को एक दुख नबीरा–ए–उस्ताज़े ज़मन जनाब उवैस मियाँ साहब के सानहे इरतेहाल की सूरत में भी देखना पड़ा। फ़क़ीर जब ''करतौली'' गांव में अपनी मौरूसी जायदाद, काश्तकारी की देखभाल के लिये रहता था तो मौसूफ़ के साथ काफ़ी उनसियत व उलफ़त व नशिस्त व बरख़ास्त थी और वह मेरे वालिदे गिरामी हज़रत रेहाने मिल्लत अलैहिर्रहमा से उम्र में एक साल बड़े थे। काफ़ी मुश्फ़िक़ाना अंदाज़ और सादगी भरा रहन सहन था। पूरे ख़ानदान और हमारे पूरे घराने से महब्बत करते थे और हर एक के दुख दर्द में शरीक होते थे। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उन्हें अपने जवारे रहमत में जगह अता फ़रमाये आमीन।

फ़क़ीर क़ादरी मुहम्मद सुब्हान रज़ा ख़ाँ सुब्हानी ग़ुफ़ेरा लहू

सज्जादा नशीन ख़ानक़ाहे आलिया क़ादरिया रज़विया बरेली शरीफ़

22 अक्तूबर 2020 ई0

उ़म्दा अख़लाक़ के मालिक थे उवैस मियाँ

जानशीने ताजुश्शरिया, काज़ी उल कुज़ात फ़िल हिंद, हज़रत अल्लामा अल्हाज अश्शाह मुफ़्ती मुहम्मद असजद रज़ा ख़ाँ साहब क़ादरी।

सज्जादा नशीन दरगाहे ताजुश्शरिया व कुल हिंद सदर जमाअ़ते रज़ा–ए–मुस्तफ़ा बरेली शरीफ़।

बेइस्मेही तआ़ला।

अल्हाज मुहम्मद उवैस रज़ा ख़ाँ अलैहिर्रहमा उस्ताज़े ज़मन अल्लामा हसन रज़ा ख़ाँ क़ादरी बरेलवी कुद्दिसा सिर्रूहुल अज़ीज़ के परपोते और आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ क़ादरी बरेलवी कुद्दिसा सिर्रूहुल अज़ीज़ के नवासे थे। आप अपनी संजीदगी, मिलनसारी और मतानत के सबब पूरे ख़ानदान में हरदिल अज़ीज़ थे, सौम व सलात के पाबंद और उम्दा अख़लाक़ के मालिक थे। इंतिक़ाले पुरमलाल के वक़्त वह ख़ानदान में सबसे उम्र रसीदा शख़्सियत थे। अल्लाह तबारक व तआ़ला ने आपको ज़ियारते हरमैन शरीफ़ैन से भी सरफ़राज़ फ़रमाया था। आपका इंतिक़ाले पुरमलाल आपके अहले ख़ाना के साथ फ़क़ीर के लिये भी ग़म व अंदोह का सबब है। मौला तआ़ला आपको जन्नतुल फ़िरदौस में आला मक़ाम अता फ़रमाये और आपके पसमांदगान को सब्रे जमील अ़ता फ़मराये। आमीन।

फ़क़ीर मुहम्मद असजद रज़ा ख़ाँ क़ादरी ग़ुफ़ेरालहु

काज़ी उल कुज़ात फ़िल हिंद बरेली शरीफ़

22 अक्तूबर 2020 बरोज़ जुमेरात।

“आह! हज़रत उवैस मियाँ साहब नहीं ‘रहे’

तस्लीमुल मशाईख़, नबीरा–ए–आला हज़रत शहज़ादए रेहाने मिल्लत पीरे तरीक़त हज़रत अल्लामा मौलाना क़ारी तस्लीम रज़ा ख़ाँ साहब।

आस्ताना–ए–आलिया क़ादरिया रज़विया मरकज़े अहले सुन्नत बरेली शरीफ़।

हज़रत अल्हाज अश्शाह मुहम्मद उवैस रज़ा ख़ान साहब रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ख़ानवादा–ए–इमाम नक़ी अली ख़ान रहमतुल्लाहि तआला अलैहि की एक बा वक़ार शख़्सियत थे। तक़वा, तहारत मे अपनी मिसाल आप थे। आपका शजरा इमाम नक़ी अली ख़ान साहब रहमतुल्लाहि तआला अलैहि से इस तरह से जा कर मिलता है। हज़रत अल्हाज उवैस मियाँ साहब इब्ने हज़रत मौलाना मुर्तज़ा रज़ा ख़ान साहब इब्ने हज़रत मौलाना हुसैन रज़ा ख़ान साहब इब्ने बिरादरे आला हज़रत अल्लामा हसन रज़ा ख़ान साहब इब्ने इमाम नक़ी अली ख़ान साहब रहमतुल्लाहि तआला अलैहि।

आला हज़रत रहमतुल्लाहि तआला अलैहि की साहिबज़ादी का निकाह आप के दादा हज़रत मौलाना हुसैन रज़ा ख़ान साहब रहमतुल्लाहि तआला अलैहि से हुआ था। लेहाज़ा आपके वालिद हज़रत मौलाना मुर्तज़ा रज़ा ख़ान साहब रहमतुल्लाहि तआला अलैहि हज़रत इमाम हसन रज़ा ख़ान साहब के पोते और आला हज़रत रहमतुल्लाहि तआला अलैहि के नवासे हुए।

आप की विलादत सन् 1933 ई0 में मुहल्ला सौदागरान बरेली शरीफ़ में हुई। घर का माहौल दीनी व मज़हबी था और वही दीनी व मज़हबी असरात आप ने इस तरह से क़बूल किये कि आप की ज़िन्दगी के आख़री अय्याम तक नज़र आते रहे। सन् 1990 ई. में आप ने अपने बड़े भाई हज़रत मुहम्मद बिलाल रज़ा ख़ान साहब के साथ बरेली शरीफ़ के क़स्बा बहेड़ी के मुहल्ला शाहगढ़ में मुस्तक़िल सुकूनत इख़्तियार कर ली थी तमाम ज़िंदगी सौम व सलात के पाबंद रहे।

आला हज़रत और मसलके आला हज़रत से बड़ी अक़ीदत व महब्बत थी, जिसकी छाप आज भी आप के बच्चों में बराबर नज़र

आती है। बरेली शरीफ़ से दूर रह कर भी दिल व जान से बरेलवी ही थे। कभी भी दुश्मनाने दीन व मसलक से ताल्लुक़ात ना रखे। अपने बच्चों को भी मसलके आला हज़रत पर पाबंद रहने की तलक़ीन करते रहे। आप के अय्यामे अ़लालत या और भी किसी वक़्त में अगर ख़ानवादा–ए–रज़विया का कोई भी फ़र्द मुलाक़ात या अ़यादत के लिए जाता तो बड़ी ही तकरीम व ताज़ीम फ़रमाते। उन से ख़ानवादे के दूसरे अफ़राद की ख़ैरियत मालूम करते। जब आप अ़लील हुए तो बरेली शरीफ़ से तक़रीबन ख़ानवादे रज़विया के सभी अफ़राद आपकी अ़यादत के लिए बहेड़ी तशरीफ ले गए। ख़ानवादा–ए–रज़विया के अफ़राद को देख कर आप बहुत मसरूर हो जाते। अल्लाह तआ़ला ने आपको 06 बेटे अ़ता फ़रमाए जो सब माशा अल्लाह बा हयात हैं और मसलक ए आला हज़रत के पाबंद हैं।

तक़रीबन डेढ़ माह की अ़लालत के बाद आप 29 मुहर्रमुल हराम 1442 हि0 मुताबिक 18 सितम्बर 2020 ई0 को शब मे 9 बज कर 45 मिनट पर अपने ख़ालिके हक़ीक़ी से जा मिले। अल्लाह मग़फ़िरत फ़रमाये।

19 सितम्बर 2020 ई0 को आपके आबाई क़ब्रिस्तान बरेली शरीफ़ में आपकी तदफ़ीन अ़मल में आई और जिस तरह से ज़िंदगी भर बरेली शरीफ़ और ख़ानवादा–ए–रज़विया से महब्बत करते थे आख़री आराम गाह भी ख़ानवादे के अफ़राद के साथ नसीब हुई। अल्लाह तआ़ला की बारगाह में दुआ़ है कि आपके दरजात में बलंदी अ़ता फ़रमाए और जुमला ख़ानवादे को सब्रे जमील अ़ता फ़रमाए। आमीन।

फ़क़ीर क़ादरी मोहम्मद तस्लीम रज़ा ख़ान

आसताना–ए–आ़लिया क़ादरिया रज़विया मरकज़े अहले सुन्नत
बरेली शरीफ़।

बहुत ख़लीक़ मुश्फ़िक़ और मेहरबान थे हज़रत उवैस मियाँ

नबीरा–ए–आला हज़रत, पीरे तरीक़त हज़रत अल्लामा अल्हाज अश्शाह मुहम्मद अहसन रज़ा ख़ाँ क़ादरी सज्जादा नशीन दरगाहे आला हज़रत बरेली शरीफ़।

बेइस्मेही तआ़ला व तक़द्दसा।

बचपन ही से हमने हज़रत अल्हाज अश्शाह मुहम्मद उवैस रज़ा ख़ाँ अलैहिर्रहमा को निहायत ख़लीक़ मिलनसार, ख़ुश अख़लाक़, ख़ुश गुफ़्तार और मुश्फ़िक़ व मेहरबान पाया है। वह ख़ानदान के तमाम बड़ो और छोटों के साथ महब्बत व यगानगत का बर्ताव करते थे। इंतिक़ाल से दो रोज़ पहले फ़क़ीर आपकी इयादत के लिए उनके घर शाहगढ़ बहेड़ी रात के वक़्त हाज़िर हुआ। चहरे पर काफ़ी नूर था। आपके इर्द गिर्द का माहौल रूहानी था। ऐसा महसूस हो रहा था कि हमारे ख़ानदानी बुज़ुर्गो ने अपने फ़ैज़ाने करम के हाले में उन्हें ले रखा है फ़क़ीर ने सीना ब सीना चले आ रहे कुछ ख़ानदानी औराद व वज़ाएफ़ पढ़कर उनके सीने पर दम किया। मुफ़्ती मुहम्मद सलीम साहब ने सूरा–ए–यासीन शरीफ़ और सूरा–ए–रअ़द शरीफ़ बा आवाज़े बलंद पढ़कर सुनायीं। काफ़ी देर तक बैठना हुआ। दो दिन के बाद जब उनके विसाल की ख़बर सुनी तो दिल व दिमाग़ को एक बड़ा झटका लगा। हमारे ख़ानदान से मुश्फ़िक़ व मेहरबान बुज़ुर्ग हस्तियों के इस दुनिया से आहिस्ता आहिस्ता जाने का शदीद अहसास हुआ। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त उनके दर्जात को बलंद फ़रमाये और उनके पसमांदगान को सब्रे जमील अता फ़रमाये। आमीन।

फ़क़ीरे क़ादरी मुहम्मद अहसन रज़ा

आस्ताना–ए–आला हज़रत ख़ानक़ाहे रज़विया बरेली शरीफ़

22 अक्तूबर 2020 ई0

क़ब्र में लहरायेंगे ता हश्र चश्मे नूर के

जामे माकूलात व मनकूलातत हज़रत अल्लामा मुहम्मद आक़िल रज़्वी, शैख़ुल हदीस व सदरूल मुदर्रेसीन जामिया रज़विया मंज़रे इस्लाम बरेली शरीफ़।

बेइस्मेही तआ़ला।

अल्लाह तआ़ला सारी कायनात का ख़ालिक़ व मालिक है और हर शय से उसकी कुदरत के जलवे अयाँ हैं। वही ज़िन्दगी के साथ सेहत व तवानाई, रोज़ी, खुशहाली, कुव्वत व ताक़त, इल्म व अक़्ल, ईमान व अदब, ख़ैर व सआ़दत से सरफ़राज़ फ़रमाने वाला है वही वक़्ते मुक़र्रर पर मौत देने वाला। मौत व हयात दोनों की उसी ने तख़लीक़ फ़रमाई और शय को फ़ानी बनाया। निज़ामे क़ायनात के मुताबिक़ हर इंसान को दुनिया से जाना और आख़िरत की मंज़िलें तय करना है। कुरआ़न का वाज़ेह ऐलान व इरशाद हैः ***''कौन है जिसे मौत से मफ़र व मकर हो''।*** उठते हुए जनाज़े ऐलान करते हुए जाते हैं ***मौत से किसको रूस्तगारी है?*** दुनिया से जाने वालों में क़ाबिले रश्क वह है जो इश्क़े रसूल, ईमान व ईक़ान, आ़माले स्वालेहा की दौलते बेदार के साथ रूख़सत हो। ज़माना उसकी मौत पर ग़म के आँसू बहाए और वह फ़रहाँ शादाँ ज़बाने हाल से यह कहता हुआ जाए।

क़ब्र में लहराएंगे ताहश्र चश्में नूर के
जलवा फ़रमा होगी जब तलअ़त रसूलुल्लाह की

ऐसी ही नेक बख़्त, सआ़दतमंद शख़्सियतों में नबीरा—ए—उस्ताज़े ज़मन, नवासा—ए—आला हज़रत, हज़रत अल्हाज अश्शाह मुहम्मद उवैस रज़ा ख़ाँ साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि थे जो निहायत नेक सीरत, आली वक़ार तक़वा शिआ़र शख़्सियत के हामिल थे।

अल्लाह ने उन्हें बेशुमार खूबियों से सरफ़राज़ फ़रमाया ख़ानदानी अज़मतो वजाहत का शर्फ़ तो उन्हें हासिल था ही इसके साथ वह बहुत मुतावाज़े मुन्कसिर्रूल मिज़ाज मिलनसार, छोटों पर शफ़ीक़ व मेहरबान थे और अब ख़ानदान में सबसे ज़्यादा उम्र दराज़ होने की सआ़दत भी उनको हासिल थी। बिला शुबाह उनकी रेहलत

सिर्फ़ अहले ख़ाना, ख़ानदान ही के लिए नहीं बल्कि सारी जमाअ़त के लिये रंज व ग़म से दो चार करने वाली है।

इंतेक़ाल की ख़बर मुझे आपके लख़ते जिगर नूरे नज़र मोहतरम आली जनाब मुहम्म्द ज़ुबैर रज़ा ख़ाँ साहब, इंचार्ज शोबा–ए–कम्प्यूटर जामिया रज़विया मंज़रे इस्लाम बरेली शरीफ़ ने दी। मैं उस वक़्त मोहिब्बे गिरामी फ़ाज़िले जलील आलिमे बा अमल हज़रत अल्लामा मौलाना अल्हाज मुफ़्ती मुहम्मद सलीम साहब मिस्बाही साकिन भगतपुर ज़िला मुरादाबाद के वालिदे गिरामी हाजी मुहम्मद नूर हसन साहब मरहूम की दसवें की फ़ातेहा के ताल्लुक़ से मुनअ़क़्क़िद होने वाली मुबारक महफ़िल में था। महफ़िल में मौजूद तमाम उलमा व शुरका ने इज़हारे अफ़सोस किया और इजतेमाई दुआये मग़फ़िरत की।

मौला–ए–करीम हज़रत की मग़फ़िरत फ़रमाये तमाम नेकियों का बेहतर से बेहतर सिला अता फ़रमाये, बलंद दर्जात बख़्शे और जन्नतुल फ़िरदौस में आला से आला मक़ाम से सरफ़राज़ फ़रमाये। मोहतरम अनीस रज़ा साहब, मोहतरम आली जनाब मुहम्मद ज़ुबैर रज़ा ख़ाँ साहब और तमाम भाईयों, अहले ख़ाना, मुताल्लेक़ीन व अहबाब को सब्रे जमील व अज्रे जज़ील अता फ़रमाये। आमीन।

मुहम्मद आक़िल रज़वी

सदरूल मुदर्रेसीन जामिया रज़विया मंज़रे इस्लाम बरेली शरीफ़

23 अक्तूबर 2020 ई0।

मौत मोमिन के लिए रहमत है

आम तौर से लोग मौत को ज़हमत समझकर उससे डरते हैं लेकिन हक़ीक़त यह है कि मौत मोमिन के लिए ज़हमत नहीं बल्कि रहमत है। मौत के सबब मोमिन के गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं बल्कि मौत उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारा होती है। हज़रते इमाम अबू नुऐम और हज़रते हमाम बैहक़ी ने शोआबुल ईमान में हज़रते अनस रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत फ़रमाया कि हुज़ूर सरवरे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सलल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

तर्जुमा :मौत कफ़्फ़ारा ए गुनाह है हर मुस्लिम के लिए।

इस हदीस के ज़िम्न में मुजद्दिदे दीनो मिल्लत इमाम ए इश्क़ो महब्बत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खाँ मुहद्दिसे बरेलवी फ़रमाते हैं कि :

बहुत बन्दे खुदा के जो ज़िन्दगी में आलूदए गुनाह थे बाद मौत पाक व तय्य़ब हो गये।

इमामे अजल हज़रते अल्लामा जलालुद्दीन सियूती रदियल्लाहु अन्हु इसके ज़िम्न में फ़रमाते हैं :

करतबी ने फ़रमाया कि इसकी वजह यह है कि मुसलमान मरते वक़्त जो तक़लीफ़ें पाता है वह उसके गुनाहों की मुआ़फ़ी का सबब बन जाती हैं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सलल्लम ने फ़रमाया कि मुसलमान को अगर काँटा या उससे कम चीज़ भी लग जाए तो वह भी उसके गुनाहों को मिटाते हैं। तो काँटे का यह हाल है तो ''सकराते मौत'' का क्या हाल होगा? जिसमें तलवार की 300 चोटों से ज़्यादा तक़लीफ़ होती है।

इब्ने अबि दुनिया ने मालिक बिन मगूल से रिवायत की कि सबसे पहली चीज़ खुशी की जो मोमिन को हासिल होगी वह मौत है क्योंकि वह उसमें अल्लाह का सवाब और उसका करम देखता है।

हज़रते अबु नुऐम ने अपनी किताब ''हिलयतुल औ़लिया'' में एक

इब्ने अब्दे रब्बुहू से रिवायत ब्यान की कि उन्होंने ''मकहूल'' से कहा : क्या तुम जन्नत को पसंद करते हो? उन्होंने कहा कि जन्नत को कौन पसंद नहीं करता। तो उन्होंने फ़रमाया कि मौत से महब्बत करो क्योंकि जन्नत को मरे बग़ैर नहीं देख सकते।

इमाम इब्ने माजा ने उम्मुल मोमिनीन सय्यदतुना आयशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत की कि हुज़ूरे अक़दस रहमते आ़लम ने इरशाद फ़रमाया कि मोमिन को हर चीज़ में सवाब मिलता है यहाँ तक कि मौत के वक़्त जो तक़लीफ़ होती है उसमें भी।

हदीस शरीफ़ में है : मौत मोमिन का तोहफ़ा है और फ़रमाया मौत मोमिन का फूल है।

एक हदीसे पाक में हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसलल्ल्म ने इरशाद फ़रमाया कि इंसान दो चीज़ों को बुरा समझता है एक मौत को बुरा समझता है हालांकि मौत उसके लिए फ़ितना और आज़माईश से बेहतर है। दूसरे माल की कमी को बुरा समझता है हालांकि माल की कमी से क़यामत में हिसाब में कमी होगी

(माख़ूज़ अज़ मज़मून मौलाना मुहम्मद राहत खाँ क़ादरी)

बरज़ख़ी ज़िन्दगी

दुनिया और आख़िरत के दरम्यान एक और आ़लम है जिसकों आ़लमे बरज़ख़ कहते हैं। मरने के बाद और कयामत से पहले तमाम इंसानों और जिन्नों की रूहों को अपने–अपने मरतबे के लिहाज़ से बरज़ख़ में रहना है। यह आ़लम इस दुनिया से बहुत बड़ा है। दुनिया बरज़ख़ के मुक़ाबले में इतनी छोटी है जैसे बच्चे के लिए दुनिया के मुक़ाबले में माँ का पेट। बरज़ख़ में कोई आराम से है तो कोई तक़लीफ़ में। मरने के बाद मुसलमानों की रूहें अपने–अपने मरतबे के मुताबिक़ अलग–अलग जगहों में रहती हैं। किसी की रूह क़ब्र पर, किसी की ज़मज़म के कुएँ पर, तो किसी की आसमान और ज़मीन के बीच। इसी तरह पहले आसमान से सातवें आसमान तक। बाअ़ज़ की आसमानों के ऊपर, कुछ अर्श के नीचे और कुछ की रूहें ''आ़ला इल्लीईन'' में रहती हैं। लेकिन यह रूहें जहाँ कहीं भी हों उनका अपने

जिस्म से ताअ़ल्लुक़ किसी न किसी तरह बराबर क़ायम रहता है। जो लोग उनकी क़ब्रों पर जाते हैं उनको वह पहचान लेती हैं और उनकी बातें सुनती हैं। किसी को देखने के लिए रूह इस बात की पाबंद नहीं कि जो क़ब्र पर आते हैं सिर्फ़ उन्हीं को देखें बल्कि हदीस शरीफ़ में रूह की मिसाल इस तरह ब्यान फ़रमायी कि एक चिड़िया पहले पिंजरे में बंद थी और अब उसे छोड़ दिया गया है।

यह अक़ीदा रखना कि रूह किसी दूसरे आदमी या जानवर के जिस्म में चली जाती है बिल्कुल बातिल और कुफ्री अक़ीदा है। इस अक़ीदे को तनासुख़, आवागवन और ''पुर्नजन्म'' का अक़ीदा कहते हैं इसको मानना कुफ्र है।

मुर्दे कलाम भी करते हैं मगर उनकी बातों को आम लोग सुन नहीं सकते। आक़ा ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सलल्लम ने फ़रमया कि जो शख़्स अपने मोमिन भाई की क़ब्र से गुज़रता है जिसे दुनिया में पहचानता था उसे सलाम करता है तो मुर्दा उसके सलाम का जवाब देता है। एक दूसरी हदीसे पाक में है कि जब आदमी अपनी क़ब्र में रख दिया जाता है तो उसके अज़ीज़ व अक़ारिब चले जाते हैं तो मरने वाला इंसान उनके जूतों की आवाज़ सुनता है।

इसी तरह एक और हदीस में यूँ इरशाद फ़रमाया गया कि जब मय्यत चारपाई पर रख दी जाती है और लोग उसे अपनी–अपनी गर्दनों पर लेकर चलते हैं तो अगर वह मय्यत नेक होती है तो अपने घर वालों से कहती है कि मुझे आगे लेकर चलो और अगर बद (गुनहगार) होती है तो कहती है हाय! मुझे कहाँ ले जाते हो! इंसान के अलावा हर चीज़ मुर्दे की आवाज़ को सुनती है और अगर इंसान मुर्दे की आवाज़ सुन लें तो बेहोश हो जाएें।

बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा 964 पर हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने उमर से मरवी एक हदीसे पाक यूँ है कि जब तुम में से कोई शख़्स मर जाता है तो सुबह व शाम उसके सामने उसका ठिकाना पेश किया जाता है। जन्नत हो या जहन्नम। फिर उस मुर्दे से कहा जाता है कि हश्र के बाद तेरा यह ठिकाना है।

एक और हदीसे पाक में है कि जब बंदा क़ब्र के सवाल व

जवाब में कामयाब हो जाता है तो एक आवाज़ देने वाला आसमान से आवाज़ देता है कि इसने सच बोला, इसके लिए जन्नत का बिछौना बिछाओ, जन्नती लिबास पहना दो और इसको जन्नत में इसका मक़ाम दिखा दो। फिर उसकी रूह को उसकी क़ब्र पर लाया जाता है तो वह वहाँ जन्नत की खुश्बू महसूस करती है फिर उसके सामने खूबसूरत इत्र में बसे हुए लिबास में एक शख्स आता है वह कहता है मुबारक हो! यही वह खुशी का दिन है जिसका तुझ से वादा किया गया था। ये साहिबे क़ब्र उससे पूछता है : ऐ खुशख़बरी देने वाले! तू कौन है? वह जवाब देता है : मैं तेरा नेक अ़मल हूँ। इस पर वह कहता है : ऐ मेरे रब! जल्द क़यामत फ़रमा दे ताकि मैं अपने अहल व अयाल के पास जन्नत में चला जाऊँ।

अगर बंदा सवाल व जवाब में नाकाम रहता है तो आसमान से आवाज़ आती है कि इसने झूठ बोला, इसके लिए जहन्नम का बिछौना बिछा दो, जहन्नमी लिबास पहना दो और इसका मक़ाम जहन्नम में दिखा दो। फिर उस पर उसकी क़ब्र इतनी तंग हो जाती है कि इधर की पसलियाँ उधर हो जाती हैं। फिर उसकी तरफ़ जहन्नम की गर्म हवाएँ आने लगती हैं। उसके साथ यह अ़मल बराबर जारी रहता है फिर बदबूदार, गंदे कपड़े पहने, एक बदसूरत शख़्स उसके सामने आता है और कहता है ऐ सियाह चेहरे वाले सुन ले! यही वह दिन है जिसका तुझसे वादा किया गया था। उससे यह पूछता है ऐ बदबूदार बदनुाम शख़्स! तू कौन है? तो वह जवाब देता है मैं तेरा अ़मल ए बद हूँ। यह सुनकर पुकारने वाला पुकारने लगता है ऐ मेरे रब! क़यामत क़ायम न कर।

इन रिवायात से मालूम होता है कि बरज़ख़ी ज़िन्दगी में इंसान को पूरा शऊ़र होता है और वह दुनिया की ज़िन्दगी की तरह आराम भी महसूस करता है और रंज व अलम भी महसूस करता है।

हदीस शरीफ़ में आया है कोई जान पहचान वाला शख़्स अपने भाई की क़ब्र से गुज़रता है और उसको सलाम करता है तो अल्लाह तआ़ला उसकी रूह को लौटा देता है यहाँ तक कि वह सलाम का जवाब देता है।

(इ़लल मुतनाहिया 2/1523)

हदीस शरीफ़ में यह भी है कि बाज़ क़ब्र वाले अपनी क़ब्रों में कुरआन भी पढ़ते हैं। हदीस शरीफ़ में है कि मुर्दे एक–दूसरे से आपस में मिलते हैं और अपने कफ़नों पर ख़ुश होते हैं और ज़िंदों के ऐसे बुरे आ़माल से उनको तकलीफ़ भी होती है कि जिन से वह दुनिया में अपने घर में तकलीफ़ महसूस करते थे। इसी तरह मुर्दे अपने घर वालों में नेक आ़माल करने वालों के लिए साबित क़दमी की दुआ़ भी करते है और बुरे काम करने वालों के लिए यह हिदायत की।

(मुसनद अलफिरदौस)

हज़रते अनस रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत है कि मुर्दा उस शख़्स को जानता–पहचानता है जो उसको उठाता है, गुस्ल देता है और उसको क़ब्र में उतारता है। दूसरी रिवायत में इसी मुसनद में है कि तुम्हारे आ़माल उन अज़ीज़ व अक़ारिब के सामने पेश किये जाते हैं जो इस दुनिया से जा चुके। अगर आ़माल अच्छे हों तो वह मुर्दे खुश होतें हैं और अगर आ़माल बुरे हों तो दुआ़ करते हैं ऐ ख़ुदा! तू इनको उस वक़्त तक मौत न देना जब तक तू इनको हिदायत न दे जैसा कि हमको हिदायत दी।

इमाम अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक ने अपनी ''किताबुज़ ज़ोहुद'' में एक रिवायत ब्यान की कि जब मोमिन की रूह क़ब्ज़ की जाती है तो अज़ीज़ बंदगाने खुदा उसका इस्तक़बाल करते हैं जैसे दुनिया में किसी खुशख़बरी सुनाने वाले का ख़ैर मक़दम किया जाता है। इस नये इंतेक़ाल करने वाले के इर्द–गिर्द पुराने मरहूमीन जमा हो जाते हैं उससे पूछने लगते हैं और तरह–तरह के सवाल करते हैं फिर एक दूसरे से कहते हैं कि अपने इस नये भाई या बहन को देखो कि अब कितने आराम से है। इसने दुनिया में बहुत परेशानियाँ उठायीं। फिर उस से दुनिया में रहने वालों का हाल पूछते हैं और कहते हैं कि फलाँ का क्या हाल है? फलाँ किस हाल में है? फिर जब किसी ऐसे शख़्स के बारे में पूछते हैं जिसका इंतेक़ाल पहले ही हो चुका होता है तो वह नया जाने वाला कहता है कि वह तो पहले ही दुनिया से मुन्तक़िल हो चुका है। यह सुनकर वह इज़हारे अफ़सोस करते हुये कहने लगते हैं

वह हमारे बीच तो नहीं आया। इसका मतलब है कि वह जहन्नम में गया और जहन्नम बहुत बुरी जगह है।

एक रिवायत में है कि दो मोमिन दोस्तों में से जब एक मर जाता है और उसको जन्नत की बशारत सुनाई जाती है तो वह अपने दोस्त को याद करते हुए अल्लाह तआ़ला की बारगाह में अर्ज़ करता है ऐ परवरदिगार! मेरा फ़ुलाँ दोस्त मुझे तेरे और तेरे रसूल की फ़रमाबरदारी का हुक्म करता था और मुझे बुराई से रोकता था और बताता था कि मुझे तेरी बारगाह में हाज़िर होना है। फिर वह मुर्दा दोस्त दुआ़ करता है ऐ मेरे रब! उसको मेरे बाद गुमराह न कर। उसको हिदायत दे और उसको वह मक़ाम दिखा जो मुझे दिखाया है उससे तू इसी तरह राज़ी हो जा जिस तरह मुझसे राज़ी हुआ, उसको जवाब मिलता है ऐ मेरे बंदे! तुझ को अगर यह मालूम हो जाता कि उसके लिए क्या अज्र है तो तू कम रोता और ज़्यादा हँसता।

अगर कोई काफ़िर दोस्तों में से एक मर जाता और जहन्नम का परवाना मिल जाता तो वह अपने दोस्त को याद करके बारगाहे इलाही में अर्ज़ करता है कि या रब मुझे तेरी और तेरे रसूल की फ़रमाँ बरदारी से मना करता था। नेकी से रोकता था और बुराई का हुक्म देता था और यह भी कहता था कि अल्लाह की बारगाह में हाज़िर नहीं होना है। फिर बद दुआ़ करता है ऐ मेरे रब! तू इसको मेरे बाद हिदायत न देना यहाँ तक कि उसको तू वह अंजाम दिखा दे जो मुझे दिखाया और इस पर ग़ज़ब फ़रमा जैसा कि मुझ पर ग़ज़ब फ़रमाया है।

क़ब्र पर तलकीन का तरीक़ा:– हदीस शरीफ़ में है जब तुम में से किसी का इंतेक़ाल हो जाये और दफ़न के बाद उसकी क़ब्र की मिट्टी बराबर हो चुके तो कोई एक शख़्स उसकी क़ब्र पे सरहाने खड़ा हो जाये फिर कहे ऐ फ़ुलाँ बिन फ़ुलाँ, यानी उसका और उसकी माँ का नाम ले। वह उसको सुनेगा और जवाब न देगा। यह शख़्स फिर दूसरी मर्तबा कहे ऐ फ़ुलाँ बिन फ़ुलाँ! अब वह सीधा बैठ जाएगा। यह शख़्स तीसरी मर्तबा कहे ऐ फ़ुलाँ बिन फ़ुलाँ! तो अब मुर्दा कहेगा : अल्लाह तुझ पर रहम करे तूने हमारी रहनुमाई फ़रमायी, मगर तू हमारी आवाज़

सुन नहीं पा रहा है। अब यह शख़्स उसको तलकीन करे :
''ऐ साहिबे क़ब्र! याद कर उस कलमा–ए–तय्यिबा ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह'' को जिसको लेकर तू दुनिया में आया था।
''बेशक तुम अल्लाह के रब होने, इस्लाम के दीन होने, कुरआन के सच्ची किताब होने और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबी होने पर राज़ी थे''।

इस तलक़ीन को सुनकर मुनकरनकीर पीछे हट जाते हैं और कहते हैं : यहाँ से चलो हमारे यहाँ रूकने से क्या होगा? क्योंकि इसको तलक़ीन करना इसके लिए हुज्जत हो गया और अल्लाह व रसूल उसके लिए हुज्जत बन गये।
किसी ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! अगर किसी की माँ का नाम मालूम न हो तो क्या कहे? फ़रमाया : माँ की जगह हज़रते हव्वा का नाम ले।

मरने से पहले क्या करे :– आदमी हर वक़्त मौत के क़ब्ज़े में है बहुत मर्तबा ऐसा होता है कि बीमार अच्छा हो जाता है और जो तीमारदारी में लगा था वह दुनिया से पहले चला जाता है। इंसान को हर वक़्त वसीयत तैयार रखना चाहिए जिसमें अपने घर वालों के लिए 'अल्लाह तआ़ला की वहदानियत, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सलल्लम की रिसालत पर क़ायम रहने, अहले सुन्नत व जमाअ़त पर जमे रहने और शरीअ़त पर अ़मल करने'' की हिदायत हो। बल्कि सबसे पहले ख़ुद अपनी इस्लाह और गुनाहों से तौबा करे, अल्लाह और रसूल की तरफ़ लौ लगाए, मौत का ख़ुशी के साथ इंतेज़ार करे कि आते वक़्त नाग़वारी न हो। (क्योंकि उस वक़्त की नाग़वारी बहुत सख़्त है। अल्लाह अपनी पनाह में रखे कि उसकी नापसंदगी की वजह से बुरे ख़ात्में का अंदेशा है। हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशादे गिरामी है कि जो अल्लाह से मिलना पसंद करेगा अल्लाह उससे मिलना पसंद फ़रमाएगा और जो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से मिलने को नापसंद रखेगा तो रब तबारक व तआ़ला उससे मुलाक़ात को नापसंद फ़रमाएगा। अपने ज़िम्मे नमाज़, रोज़ा, ज़कात जो कुछ

बाक़ी हो फौरन बक़द्रे ताक़त उसको अदा करे। हज न किया हो और फ़र्ज़ था तो देर न लगाए, जिस्म में ताक़त न रही तो हज्जे बदल करा दे। बंदों के हक़ जिस क़द्र हों फ़ौरन अदा करे और मुआफ़ी चाहने के हों तो उनमें देर न करे। मुआफ़ी चाहने में कितनी ही तवाज़ो व इनकिसारी करना पड़े उसमें अपनी क़स्रे शान न समझे इसमें ज़िल्लत नहीं। ज़िल्लत तो उस में है कि क़यामत के दिन अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की बारगाह में इस तरह हाज़िर किया जाएगा कि उसने बंदों के हक़ मारे थे, किसी को बुरा कहा था, किसी की ग़ीबत की थी, किसी पर ज़्यादती की थी, किसी को तकलीफ़ पहुँचायी थी, किसी को बेइज़्ज़त किया था, अब खुदा बंदे कुद्दूस के दरबार में यह तमाम हक़दार अपना हक़ मांगने के लिए मौजूद हैं। लेकिन हाथ ख़ाली है। उस वक़्त यह होगा कि जो उसके पास नेकियाँ होंगी वह हक़दारों को दे दी जाएंगी, नेकियाँ ख़त्म हो जायेंगी तो हक़दारों के गुनाह उसके सर लाद दिये जायेंगे और जब उसके पास कोई नेक अ़मल नहीं रहेगा तो उसको जहन्नम में फेंक दिया जाएगा। अल्लाह तआ़ला अपनी पनाह में रखे।

जब तक ज़िन्दगी है ख़ौफ़े खुदा से मुताल्लिक आयतें और हदीसें पढ़ा करे। पढ़ नहीं सकता तो दूसरों से पढ़वाकर सुना करे और जब वक़्त आ पहुंचे तो अब रहमत व खुशख़बरी की आयतें और हदीसें सुनाई जायें ताकि वह यह ख़्याल अपने दिल में अच्छी तरह जमा ले कि मैं उसकी बारगाह में जा रहा हूँ जो निहायत मेहरबान, रहम वाला है, बहुत बख़्शने वाला और बंदों के ऐबों को छुपाने वाला है।

मौत के वक़्त अंजाम दिये जाने वाले आमालः—जब मौत की अ़लामतें पायी जाएँ तो सुन्नत यह है कि घर वाले दाहिनी करवट पर लिटाकर उसका मुँह क़िबले की तरफ़ कर दें। जाँकनी की हालत में जब तक रूह गले को न आयी हो उसे तलक़ीन करें यानी उसके पास बलंद आवाज़ से "अश्हदो अन ला इलाहा इल्लल्लाहु व अश्हदो अन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाह पढ़ें।

मौत के वक़्त नेक और परहेज़गार लोग मरने वाले के आस–पास हों तो यह बहुत अच्छी बात है। उस वक़्त सूरा–ए–यासीन

और सूरा–ए–राअ़द पढ़ें। उस जगह से तस्वीरों और कुत्तों को फ़ौरन हटा दें उसके पास इस हालत में दुनियावी बातें और आवाज़ के साथ रोना पीटना न करें, बल्कि उसकी आसानी के लिए दुआ़–ए–ख़ैर करें फिर जब रूह बदन से निकल जाये तो एक चौड़ी पट्टी जबड़े के नीचे से सर पर ले जाकर बाँध दें ताकि मुँह खुला न रह जाये, आँखें बंद कर दें, उँगलियाँ और हाथ–पाँव नरमी के साथ सीधे कर दें, सारे बदन को किसी कपड़े से छुपा दें उसे चारपाई या तख़्त वग़ैरह किसी ऊँची चीज़ पर रखें, उसके ज़िम्मे क़र्ज़ या किसी क़िस्म की अदाएगी हो तो उसे जल्द से जल्द अदा कर दें, मय्यत के पास तिलावते कुरआ़ने मजीद करें।

जब तक जिस्म में रूह बाक़ी है और हालते नज़ा में गिरफ़्तार यह ऐसी औरत है जिसका शौहर ज़िंदा है तो शौहर औरत के पास आ सकता है। बाज़ लोग इसी वक़्त से शौहर को दूर कर देते हैं। यह ज़ुल्म है और सख़्त जिहालत है बल्कि औरत मर जाये जब भी शौहर बीवी को देख सकता है। हाँ हाथ लगाना मना है।

(फ़तावा रज़विया व बहारे शरीअ़त)

तजहीज व तकफ़ीन, नमाज़–ए–जनाज़ा और तदफ़ीन

जब इंतेक़ाल हो जाये तो उसको सुन्नत तरीक़े पर गुस्ल दें और कफ़न पहनायें कि मय्यत को नहलाना फ़र्ज़े किफ़या है। नहलाने का तरीक़ा यह है कि जिस चारपाई, तख़्त या तख़्ते पर नहलाने का इरादा हो उसको तीन या पाँच या सात बार धूनी दें फिर उस पर मय्यत को लिटाकर नाफ़ से घुटनों तक किसी कपड़े से छुपा दें, फिर नहलाने वाला अपने हाथ पर कपड़ा लपेटकर पहले इस्तंजा कराये, फ़िर नमाज़ की तरह वुज़ू कराये यानी मुँह फिर कोहनियों समेत हाथ धोए फिर सर का मसह़ करे फिर पाँव धोए मगर मय्यत के वुज़ू में गट्टों तक पहले हाथ धोना, कुल्ली करना और नाक में पानी डालना नहीं है, हाँ कोई कपड़ा या रूई की फुरैरी भिगोकर दाँतों और मसूड़ों व होंटों और नथनों पर फेर दें फिर सर और दाढ़ी के बाल हों तो पाक साबुन या बेसन या ख़ाली नीमगर्म पानी से धोएँ फिर बायीं करवट पर लिटाकर सर से पाँव तक बेरी का पानी बहाएँ कि तख़्ते

तक पहुँच जाए। फिर दाहिनी करवट पर लिटाकर यूँ ही करें। फिर टेक लगाकर बिठाएँ और नरमी के साथ पेट पर नीचे की तरफ़ हाथ फेरें। अगर कुछ निकले धो डालें। फिर आख़िर में सर से पाँव तक कफूर का पानी बहाएँ और उसके बाद बदन को किसी पाक कपड़े से आहिस्ता से पोछ दें।

एक मर्तबा सारे बदन पर पानी बहाना फ़र्ज़ है और तीन मर्तबा सुन्नत उसके बाद उसे कफन पहनाएँ क्योंकि मय्यत को कफ़न देना फ़र्ज़–ए–किफ़ाया है।

कफ़न की तफ़सील यह है कि मर्द के लिए तीन कपड़े सुन्नत हैं एक तहबंद यानी जो सर से पाँव तक हो, दूसरी कफ़नी यानी कमीज़ जो गर्दन की जड़ से पाँव तक हो, तीसरी चादर यानी सर से पाँव की तरफ़ इतनी ज़्यादा हो कि बाँध सकें। चारपाई पर पहले चादर बिछाएँ और कफ़नी पहनाकर तहबंद लपेट दें। पहले बायीं तरफ़ फिर दाहिनी तरफ़ लपेटें ताकि दाहिना हिस्सा बाएँ के ऊपर रहे, फिर इसी तरह चादर लपेटकर ऊपर–नीचे लपेट दें।

औरत के लिए पाँच कपड़े सुन्नत हैं तीन यही हैं मगर इसमें फ़र्क यह है कि मर्द की कमीज़ चौड़ाई में मोंढों की तरफ़ चीरना चाहिए और औरत की लम्बाई में सीने की जानिब, चौथा कपड़ा ओढ़नी है जो डेढ़ गज़ लम्बी हो, पाँचवाँ कपड़ा सीनाबंद है कि सीने से नाफ़ तक बल्कि अफ़ज़ल यह है कि रानों तक हो। पहले चादर फिर तहबंद बिछाकर कफनी पहनाएँ, बालों के दो हिस्से कर के सीनाबंद पर कफ़नी के ऊपर मोड़कर रखें, उसके ऊपर ओढ़नी सर से उढ़ाकर बग़ैर लपेटे मुँह पर डाल दें, फिर तहबंद और चादर लपेटकर उनके ऊपर सीने से कानों तक सीनाबंद बाँध दें। यह कफ़न–ए–सुन्नत है।

जनाज़ा ले जाने का तरीक़ा :– जनाज़े के साथ अल्लाह और उसके रसूल का ज़िक्र करना, कलमा शरीफ़ पढ़ना, दुरूदे पाक और नात शरीफ़ पढ़ते जाना यह सब अच्छी बातें हैं और इनको करना चाहिए।

नमाज़े जनाज़ा :– जहाँ नमाज़े जनाज़ा पढ़ें उस जगह का पाक होना ज़रूरी है लिहाज़ा जो लोग नापाक जगह पर खड़े होकर नमाज़

पढ़ेंगे उनकी नमाज़ न होगी। इसी तरह उनकी भी नमाज़ न होगी जिनके जूतों के तले नापाक होंगे और वह जूता पहनकर और जूतों पर पाँव रखकर नमाज़ पढ़ें। जूता पहनकर नमाज़ पढ़ें तो जूता और उसके नीचे की ज़मीन दोनों का पाक होना ज़रूरी है और अगर जूते पर खड़े होकर पढ़ें तो जूते का पाक होना ज़रूरी है। जनाज़े की नमाज़ के लिए जो जाऐ नमाज़ बिछाई जाती है वह इसी एहतियात के लिए है कि बे एहतियाती की वजह से अगर नमाज़ियों में से किसी की नमाज़ न भी हुई तो इमाम की हो जाएगी और आम मुसलमान गुनाह से बच जाएँगे क्योंकि नमाज़े जनाज़ा के लिए जमाअ़त शर्त नहीं।

(माखूज़ अज़ मज़मून अल्लामा हनीफ़ खाँ रज़वी)

जनाज़े को काँधा देना:– जनाज़े को काँधा देना इबादत है। हर शख़्स को चाहिए कि इबादत में कोताही न करे। सुन्नत यह है कि चार शख़्स जनाज़ा उठाएँ और एक के बाद दूसरे चारों पायों को काँधा दें। हर बार दस–दस क़दम चलें। पूरी सुन्नत यह है कि पहले दाहिने सरहाने को काँधा दें फिर दाहिनी पायेंती फिर बाएँ सरहाने और फिर बायीं पायेंती।

नमाज़े जनाज़ा की इमामत : नमाज़े जनाज़ा में इमामत का हक़ बादशाहे इस्लाम को है फिर क़ाज़ी फिर इमामे जुमा फिर इमामे मुहल्ला फिर वली को। वली के सिवा किसी ऐसे ने नमाज़ पढ़ाई जो वली पर मुक़द्दम न हो और वली ने उसे इजाज़त भी न दी थी तो अगर वली नमाज़ में शरीक न हो तो नमाज़ का ऐआ़दा कर सकता है और ऐआ़दा में जो शख़्स पहली नमाज़ में शरीक न था वह वली के साथ पढ़ सकता है और जो शरीक था वह वली के साथ नहीं पढ़ सकता कि जनाज़े की दो मर्तबा नमाज़ नाजाइज़ है। सिवा उस सूरत के कि बग़ैर इज़्ने वली पढ़ाई।

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीयत हिस्सा–4 जिल्द 1 सफ़हा 153)

कफ़न पर फूलों की चादर और अहद नामा लिखना

कफ़न पर फूलों की चादर डालना अच्छा है जैसे क़ब्रों पर फूल डाले जाते हैं कि जब तक तर रहेंगे तस्बीह करते रहेंगे, मय्यत का दिल बहलता रहेगा और रहमत उतरती रहेगी। इसी तरह मय्यत की

पेशानी या कफ़न पर अहद नामा लिखना कि उससे मग़फ़िरत की क़वी उम्मीद है। दफ़न के बाद क़ब्र पर पानी छिड़कना सुन्नत है। और अगर ज़माना गुज़र जाने की वजह से मिट्टी मुनतशिर हो गयी या नई मिट्टी डाली गयी तो अब भी पानी डाला जाये कि निशानी बाक़ी रहे और क़ब्र की तौहीन न होने पाये। दफ़न के बाद क़ब्र के पास इतनी देर बैठना कि एक ऊँट ज़िबह करके उसका गोश्त बनाया जाये, सुन्नत है। बल्कि ज़्यादा देर या चंद दिनों तक बैठना भी दुरूस्त है लेकिन ख़्याल रहे कि वहाँ बेकार बातें, हंसी मज़ाक़ और ग़फ़लत जैसी हरकात से बचें। तिलावते कुर्आन, दुरूद शरीफ़, कलमए तय्यबा और इसी तरह अच्छे कामों में मशग़ूल रहें कि इन चीज़ों से रहमत नाज़िल होती है और ज़िन्दों के क़ब्र के पास बैठने से मुर्दे का दिल बहलता है। दफ़न के बाद से जुमें के दिन तक बैठना बेहतर है। एक रिवायत में आया है कि मुसलमान पर मआज़ अल्लाह अज़ाबे क़ब्र होता है तो सिर्फ़ जुमे तक होता है। जुमे की रात आते ही उठा लिया जाता है। शजरा या अहद नामा क़ब्र में रखना जायज़ है और बेहतर यह है कि मय्यत के मुँह के सामने क़िब्ले की जानिब ताक़ खोद कर उसमें रखे। मुर्दे के सीने और पेशानी पर ''बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'' लिखना जायज़ है। यूँ भी कर सकते हैं कि पेशानी पर बिस्मिल्लाह शरीफ़ और सीने पर कलमए तय्यबा लिख दें। मगर नहलाने के बाद कफ़न पहनाने से पहले कलमे की उंगली से लिखें रोशनाई वग़ैरा से न लिखें। ज़ियारते कुबूर मुस्तहब है, अगर रोज़ न हो सके तो कम अज़ कम हफ़्ते में एक दिन ज़ियारत करें। जुमा या जुमेरात या हफ़्ता या पीर के दिन मुनासिब है। सबसे अफ़ज़ल रोज़ जुमे का दिन वक़्ते सुबह है। औलिया–ए–किराम के मज़ाराते मुबारका पर सफ़र करके जाना जायज़ है कि यह अपने ज़ायरीन को नफ़ा पहुँचाते हैं। दफ़न के बाद मुर्दे को तलक़ीन करना अहले सुन्नत के नज़दीक़ मशरूअ़ है।

ईसाले सवाब :– नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात और हर क़िस्म की इबादत और हर अमले नेक, फ़र्ज़ व नफ़ल का सवाब मुर्दों को पहुँचा सकते हैं। उन सबको पहुँचेगा और उसके सवाब में कुछ कमी न होगी बल्कि उसकी रहमत से उम्मीद है कि सब को पूरा मिले। यह नहीं कि

उसी सवाब की तक़सीम होकर टुकड़ा टुकड़ा मिले। (रद्दुल मोहतार)

मसाकीन को खाना खिलाना और नेक नियती से ख़ैरात करना जिसमें न मोहताज पर एहसान रखा जाये और न उसको तकलीफ़ दी जाये, यह बाइसे सवाब है। परिंदों के लिये पानी रखना, दाना डालना हत्ताकि कुत्ते को रोटी देना, मिस्कीन को कपड़े देना, मीलाद करवाना यह सब अज्र व सवाब की बातें हैं। इन सब का सवाब मय्यत को पहुँचता है और इन सबसे मुर्दा ऐसे ख़ुश होता है जैसे कि दुनिया में दोस्तों के तोहफ़ों से ख़ुश होता था। फ़रिश्ते इन सवाबों को नूर के तबक़ में रखकर मय्यत के सामने ले जाते हैं और उससे कहते हैं कि ऐ गहरी क़ब्र वाले! यह सवाब तेरे फ़लाँ अज़ीज़ या दोस्त ने भेजा है।

क़ब्र पर फूल पेश करना : मय्यत की क़ब्र पर फूल पेश करना मुफ़ीद है, वह जब तक तर हैं अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तस्बीह करते हैं और मय्यत का दिल बहलता है। हाँ अगरबत्ती जलाना अगर कुरआने पाक की ताज़ीम के लिये है या वहाँ कुछ लोग बैठे हैं और उनको अगरबत्ती से राहत होती है तो अच्छा है लेकिन मय्सत को इस से कोई फ़ायदा नहीं है इसी वजह से बिला वजह अगरबत्ती सुलगाने को मना किया गया है।

फ़ातेहा के खानों का हुक्म :— फ़ातिहा का खाना बेहतर यह है कि मसाकीन को दें, अगर ख़ुद मोहताज है तो ख़ुद ही खा ले अपनी बीवी या अपने बच्चे को खिला दे हर सूरत में सवाब है क्योंकि हदीस शरीफ़ में है कि जो कुछ तू अपनी औलाद को खिलाये वह तेरे लिये सदक़ा है, जो कुछ तू अपने ख़ादिम को खिलाये वह तेरे लिये सदक़ा है और जो कुछ तू अपने नफ़्स को खिलाये वह भी तेरे लिये सदक़ा है।

ईसाले सवाब का तरीक़ा : सवाब पहुँचाने के लिये इस तरह कहे : ऐ अल्लाह! तिलावते कुरआन, दुरूद शरीफ़, कलमए तय्यबा और यह तआ़म जो खाना खिलाने के लिये रखा गया है उसको तू अपनी बारगाह में क़बूल फ़रमा और इस पर जो तू हमें सवाब अता फ़रमाये वह हमारी तरफ़ से फुलाँ शख़्स को पहुँचा दे और अगर इसमें इतना और इज़ाफ़ा कर ले कि जितने मुसलमान मर्द और औरत मौजूद हैं

और जितने क़यामत तक आने वाले हैं उन सब की अरवाह को पहुँचा दे। तो उन सब को भी सवाब मिलेगा और सबके बराबर इस ईसाले सवाब करने वाले को भी मिलेगा। सवाब सिर्फ़ नियत ही से पहुँच जाता है मगर ईसाले सवाब की दुआ भी करना चाहिए। जैसा कि हमारे यहाँ इसका रिवाज है और बहुत ख़ूब है।

मय्यत के यहाँ खाने का हुक्मः— वह खाना जो ख़ास ईसाले सवाब की नियत से पकाया जाये ख़्वाह बुज़ुर्गाने दीन के ईसाले सवाब के लिये हो या आम मुसलमानों को सवाब पहुँचाने के लिये, उस खाने को ग़नी भी खा सकते हैं हाँ वह खाना जिसका अहतेमाम मौत में बतौरे दावत किया जाता है वह ममनू और बिद्अ़त है।

तबारक की अस्ल :— तबारक की अस्ल ईसाले सवाब है इसलिये कि सूरए मुल्क अज़ाबे क़ब्र से बचाने और मय्यत को नजात दिलाने वाली है बहुत सी हदीसों में इसका हुक्म आया है। हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास से मरवी है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि यह (सूरए मुल्क) अज़ाबे क़ब्र को दफ़ा करती है और अज़ाबे इलाही से नजात दिलाने वाली है। इसे जिस चीज़ पर चाहें पढ़ें जैसे रोटी, छुआरे, बादाम वग़ैरा फिर इन्हें तक़सीम कर दें। (माख़ूज़ अज़ मज़मून अल्लामा हनीफ़ खाँ)

अज़ाब व सवाब जिस्म व रूह दोनों को होता है :— अज़ीज़ व अक़ारिब को जो तकलीफ़ पहुँचती है उसका मलाल मय्यत को भी होता है। हदीस में है कि जब तुम मुर्दे पर रोते हो तो वह मुर्दा भी रोने लगता है तो तुम उसे ग़मगीन न करो।

इंसान कभी ख़ाक नहीं होता, बदन ख़ाक हो सकता है और वह भी पूरा जिस्म नहीं बल्कि कुछ अज्ज़ाए असलिया जो बहुत बारीक होते हैं न वह गलते न वह जलते हैं, हमेशा बाक़ी रहते हैं, इन्हीं पर क़यामत के दिन दोबारा जिस्म की तरकीब होगी। अज़ाबो सवाब रूह और जिस्म दोनों के लिये है। जो फ़क़्त रूह के लिये मानते हैं वह गुमराह हैं। रूह भी बाक़ी और जिस्म के अज्ज़ाये असलिया भी बाक़ी और जो ख़ाक हो गये वह भी बिल्कुल फ़ना नहीं हुए बल्कि वह जुदा जुदा हो गये और उनकी शक्ल बदल गयी।

हज़रत उवैस मियाँ कुछ यादें और कुछ बातें "जाने वाले नहीं आने वाले"

मुहम्मद सलीम बरेलवी।

29 मोहर्रमुल हराम 1442 हि0 18 सितम्बर 2020 शबे हफ़्ता राक़िम जामिया रज़विया मंज़रे इस्लाम सौदागरान बरेली शरीफ़ के दफ़्तर में बैठा मसरूफ़े कार था कि अचानक तक़रीबन 10 बजे रात को रफ़ीक़े गिरामी, मुहिब्बे मोहतरम आली जनाब ज़ुबैर रज़ा ख़ाँ साहब का फ़ोन फ़क़ीर राक़िमुल हुरूफ़ के मोबाईल पर आया, रिसीव करते ही राक़िमुल हुरूफ़ ने सलाम किया मगर जवाब आँसूओं में भीगी हुई आवाज़ में मौसूल हुआ, ख़ैरियत पूछने पर सिसकते हुये बताया कि वालिद साहब का अभी तक़रीबन पौने दस बजे इंतेक़ाल हो गया है। इस ख़बरे वहशतनाक ने पूरे वजूद को ग़मो अंदोह की चादर में लपेट दिया, कलम–ए–तरजीअ़ पढ़कर फ़ौरी तौर पर एक मुख़्तसर सा मज़मून मोबाईल पर लिखकर आम कर दिया जिसका मज़मून यह थाः

आह! नबीरा–ए–उस्ताज़े ज़मन न रहे!

आज 29 मोहर्रमुल हराम 1442 हि0 18 सितम्बर 2020 बरोज़ जुमा मुबारका शबे हफ़्ता बाद नमाज़े ईशा तक़रीबन 9 बजकर 45 मिनट पर नबीरा–ए–उस्ताज़े ज़मन और हमारे मोहिब्बे मोहतरम, रफ़ीक़े कार जनाब ज़ुबैर रज़ा ख़ाँ साहब उस्ताज़ जामिया रज़विया मंज़रे इस्लाम बरेली शरीफ़ के वालिदे गिरामी बाला मर्तबत मोहतरमुल मक़ाम हज़रत उवैस रज़ा ख़ाँ "उवैस मियाँ" साहब का विसाले पुरमलाल हो गया। अल्लाह उनकी मग़फ़िरत फ़रमाए।

मौसूफ़ मरहूम का ताअल्लुक़ बिरादरे आला हज़रत, उस्ताज़े ज़मन हज़रत अल्लामा हसन रज़ा ख़ाँ बरेलवी अलैहिर्रहमा की नस्ल से था। आपका सिलसिला–ए–नस्ब अल्लामा हसन रज़ा ख़ाँ बरेलवी अलैहिर्रहमा से यूँ मिलता हैः–

उवैस रज़ा ख़ाँ बिन मौलाना मुर्तज़ा रज़ा ख़ाँ बिन अल्लामा हकीम हुसैन रज़ा ख़ाँ (भतीजे व दामाद सय्यदी सरकार आला हज़रत) बिन अल्लामा हसन रज़ा ख़ाँ अलैहिर्रहमतु वर रिज़वान।

आप तक़रीबन 87 साल के बुज़ुर्ग थे काफ़ी दिनों से अलील थे आपके विसाले पुरमलाल की ख़बर सुनकर ख़ानवादा–ए–रज़विया में सोगवारी फैल गयी। मंज़रे इस्लाम के असातज़ा व तल्बा भी बेचैन व मुज़तरिब हो गये। हज़रत साहिबे सज्जादा मद्दाज़िल्लहु ने भी कलमा–ए–तरजीअ़ पढ़कर दुआये मग़फ़िरत की और अपने गहरे रंज का इज़हार फ़रमाया। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त मग़फ़िरत फ़रमाये और दर्जात बलंद फ़रमाये। पसमांदगान व अहले ख़ाना और शहज़ादगान को सब्रे जमील अता फ़रमाये। आमीन।

शरीके ग़म

(मुहम्मद सलीम बरेलवी)

ख़ानदानी पसमंज़र :– आनन फ़ानन ही में यह अंदोह नाक ख़बर बहेड़ी ज़िला बरेली शरीफ़ के हुदूद से निकलकर उफ़के रज़वियत में फैल गयी। हर तरफ़ से ताज़यती पैग़ामात आना शुरू हो गये। राक़िम भी काफ़ी देर तक मौसूफ़ अलैहिर्रहमा के ख़्यालात में डूबा रहा, आपके नुकूशे हयात का कभी एक मंज़र पर्दा–ए–ज़हन पर उभरता तो कभी दूसरा, ख़्यालातो तसव्वुरात का एक न ख़त्म होने वाला सिलसिला ज़हनो दिमाग़ पर हावी था अचानक पर्दा–ए–ज़हन पर 2010 ई0 का वह मंज़र नमूदार होता है कि जब पहली मर्तबा राक़िम ने आपके सरापा का दीदार किया, यह वह मौक़ा था कि जब हज़रत अल्लामा अल्हाज अश्शाह मुहम्मद सुब्हान रज़ा ख़ाँ सुब्हानी मियाँ मद्दाज़िल्लहुन नूरानी, साहिबे सज्जादा आस्ताना–ए–आला हज़रत के लख़्ते जिगर हज़रत अल्लामा अल्हाज अश्शाह मुहम्मद अहसन रज़ा ख़ाँ क़ादरी मद्दाज़िल्लहु को उ0 प्र0 हुकूमत की जानिब से उ0 प्र0 मदरसा तालीमी बोर्ड का चेयरमेन बनाया गया था और हज़रत उवैस मियाँ साहब अलैहिर्रहमा अपने फ़रज़ंदे अर्जमंद मोहतरम मोहम्मद जुबैर रज़ा ख़ाँ साहब के साथ उन्हें मुबारकबाद देने के लिये बनफ़्से नफ़ीस यहाँ बरेली शरीफ़ तशरीफ़ लाये थे। निहायत सादगी भरा अंदाज़, मुश्फ़िक़ाना लबो लहजा, आदातो अतवार में ख़ानदानी और नस्बी वजाहत, राक़िम सोचने लगा कि इतने अज़ीम ख़ानदान के फ़र्द और ऐसा सादगी भरा आमियाना अंदाज़!

अचानक पर्दा–ए–ज़हन पर मंज़र नामा बदलता है और ख़्यालात का रूख़ अफ़ग़ानिस्तान की उस सरज़मीन की तरफ़ मुड़ जाता है जिसे ''ख़ित्त–ए–रोह'' कहा जाता है। यह वही ''ख़ित्त–ए–रोह'' है कि जिसके हुदूदे अरबा कश्मीर, हिरात, काश्ग़र, भक्कड़ और बुलूचिस्तान से मिलते हैं। ख़ित्ता–ए–''रोह'' नामी यह अज़ीम ख़ित्ता कंधार, काबुल, पेशावर, ख़ैबर, बाजोड़, हसन अब्दाल और कोहे सुलेमान वग़ैरा पर मुश्तमिल है। इसी ख़ित्ते से बरेली शरीफ़ के इलाक़े में आने वाले सरदारों और पठानों को ''***रोहीला सरदार***'' और ''***रोहीला पठान***'' कहा जाता है और इन्हीं की मुनासिबत से इस पूरे ख़ित्ते को बाद में ''***रूहेलखण्ड***'' के नाम से जाना जाता है। रोहीला सरदारों की आमद से पहले मौजूदा रूहेलखण्ड का नाम ''***कठेर***'' था। इसी ख़ित्ता–ए–रोह'' के क़बीले ''***बढ़ैच***'' से मौसूफ़ अलैहिर्रहमा का नस्बी ताल्लुक़ है। यह वही कबीला–ए–बढ़ैच है कि जिसके मुस्तनद शजरे की तफ़सील मुजाहिदे जंगे आज़ादी और वालिये रूहेलखण्ड, हाफ़िज़ुल मुल्क नवाब हाफ़िज़ रहमत ख़ाँ साहब अपनी मशहूर तसनीफ़ ''***ख़ुलासतुल अंसार***'' में ब्यान करते हुए इस शजरे में बहुत से औलिया–ए–किराम के साथ हज़रते आदम, हज़रते शीश, हज़रते इदरीस, हज़रते नूह, हज़रते हूद, हज़रते इब्राहीम, हज़रते इस्हाक़ और हज़रते याक़ूब अलैहिमुस्सलाम के अस्मा–ए–मुबारका को ज़िक्र फ़रमाया है।

यही वह खित्त–ए–रोह और यही वह क़बीला बढ़ैच है कि जिसके एक बहादुर हुक्मरान के अज़ीम बहादुर और जंग जू शहज़ादे को मोअर्रख़ीन ''***शुजाअ़त–ए–जंग मुहम्मद सईद उल्ला ख़ाँ***' के नाम से जानते हैं, यही वह अज़ीम शहज़ादे हैं कि जो इस ख़ानदान में सबसे पहले नादिर शाह के ज़माने 1739 ई0 में सरज़मीने हिन्दुस्तान पर तशरीफ़ लाये, आपके जंगी कारनामों की वजह से शाही हुकूमत की जानिब से आपको मंसबे ''***शशहज़ारी*** तफ़वीज़ किया गया था। लाहौर का शीश महल आप ही के ज़ेरे इस्तेमाल था। आप ही के शहज़ादे ***सअ़ादत यार ख़ाँ साहब***को मुग़ल बादशाह मुहम्मद शाह ने तस्ख़ीरे रूहेलखण्ड की मुहिम सौंपी थी। आपने निहायत दूर अंदेशी,

हिकमते अमली और तदबीरे हर्ब के साथ तस्ख़ीरे रूहेलखण्ड की कमान संभाली और अपनी जवाँ मर्दी और बहादुरी से हर मारका सर करते हुये इस पूरे ख़ित्ते में अपनी फ़तहो ज़फ़रमंदी का परचम नस्ब कर दिया जिसके ईनाम में आपको बदायूँ के कुछ मवाज़ात (गांव) बतौर जागीर दिये जाने और बरेली का सूबेदार मुक़र्रर किये जाने का शाही फ़रमान सादिर हुआ मगर जब यह शाही फ़रमान बरेली शरीफ़ पहुँचा तो उस वक़्त आप मर्ज़–ए–विसाल में मुब्तिला हो चुके थे।

अचानक फिर मंज़र नामा बदलता है और शहज़ादा–ए–बाला मर्तबत जनाब सआ़दत यार ख़ाँ साहब के तीनों साहिबज़ादगान ***आज़म ख़ाँ, मोअज़्ज़म ख़ाँ और मुकर्रम ख़ाँ*** के हालत पर्दा–ए–ज़हन पर नमूदार होते हैं इन तीनों शहज़ादगान में से मुहम्मद आज़म ख़ाँ बिन सआ़दत यार ख़ाँ वह अज़ीम शहज़ादे हैं कि जिन्होंने मुस्तक़िल तौर पर बरेली शरीफ़ में ही सुकूनत इख़्तेयार करने का फ़ैसला किया। आपका मिज़ाज चूँकि मज़हबी था इसलिए शाही मंसब से तर्के तअ़ल्लुक़ करके इबादत व रियाज़त और ज़ोहदो इत्तेक़ा की ज़िंदगी इख़्तेयार कर ली। आपके अजदादे किराम जो कल तक दुनयवी तख़्तो ताज और शाहाना कर्रो फ़र के मालिक बन कर लोगों के ज़ाहिर पर हुकूमत करते थे मगर आप तसव्वुफ़ो सुलूक और मारफ़तो रूहानियत की मंज़िले तय करके लोगों के बातिन और दिलो दिमाग़ पर हुकूमत करने लगे और रूहानियत के एक अज़ीम ताजदार बन गये।

मंज़र नामा बदलता है और ख़्यालात व तसव्वुरात का रूख़ मुड़ जाता है हज़रत मुहम्मद आज़म ख़ाँ साहब के बेटे ***हाफ़िज़ मुहम्मद काज़िम अली ख़ाँ*** साहब की तरफ़। आपको मुग़ल शाही दरबार से इलाक़ा–ए–बदायूँ में आठ गांव जागीर के दवामी ला ख़राजी मआ़फ़ी अता हुये थे और इसके साथ ही आपको शहर बदायूँ का तहसीलदार भी मुक़र्रर किया गया था। यह ओहदा आजकल की कलेक्ट्री के बराबर था। 200 सवारों की बटालियन हमेशा आपकी ख़िदमत पर मामूर रहा करती थी लेकिन आप इस दुनयवी कर्रो फ़र पर मुतमईन न थे बल्कि आपकी ज़िंदगी और आदात व अतवार में भी दीनदारी व तक़वा का रंग ग़ालिब था चुनाचें आप ख़ानवादा–ए–फ़िरंगी महल

लखनऊ की बुज़ुर्ग और क़ाबिल शख़्सियत, आरिफ़े हक़ हज़रत मौलाना शाह नूरूल हक़ क़ादरी रज़्ज़ाक़ी फ़िरंगी महली (विसाल 1238 हि0 1822 ई0) शागिर्द–ए–रशीद बहरूल उलूम हज़रत मौलाना अब्दुल अली मुहम्मद फ़िरंगी महली अलैहिर्रहमा से निस्बते बैअ़तो इरादत क़ायम करके उनके दामने फ़ैज़ से वाबिस्ता हो गये और सिलसिला ए आलिया क़ादरिया रज़्ज़ाक़िया की इजाज़त व ख़िलाफ़त से भी नवाज़े गये।

मंज़र नामा फिर बदलता है और पर्दा–ए–ज़हन पर आपके शहज़ादे और ख़ित्ता–ए–रूहेलखण्ड के मारूफ़ आलिम और फ़क़ीहो मुफ़्ती ***हज़रत अल्लामा मुफ़्ती रज़ा अली ख़ाँ*** बरेलवी अलैहिर्रहमा के ज़माना–ए–ख़ैर व बरकत के मनाज़िर नमूदार होते हैं। आप ही वह अज़ीम फ़क़ीह व मुफ़्ती हैं कि जिन्होंने इस ख़ानवादे में सबसे पहले बाज़ाब्ता तौर पर फ़तवा नवेसी के ज़रिये ख़ल्के ख़ुदा की बेमिसाल ख़िदमात अंजाम देना शुरू कीं। आपने टोंक राजस्थान में मौलाना क़ाजी ख़लीलुर्रहमान रामपुरी से तालीम हासिल की। आपको बैअ़त व इरादत की निस्बत सिराजुल हिंद शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिसे देहलवी और हज़रत मौलाना नूरूल हक़ फ़िरंगी महल्ली लखनवी के शागिर्दे रशीद ख़लीफ़ा हज़रत शाह मुहम्मद आफ़ाक़ नक़्शबंदी मुजिद्ददी देहलवी, हज़रत मौलाना शाह फ़ज़लुर्रहमान गंज मुरादाबादी (1313 हि0 1895 ई0) से हासिल हुई। इस तरह आप नक़्शबंदी मुजद्दिदी सिलसिले से वाबिस्ता हो गये। आपका विसाल बरेली शरीफ़ ही में 2 जुमादिल ऊला 1282 हि0 / 1865 ई0 को हुआ।

मंज़र नामा एक बार फिर बदलता है और ज़हन व दिमाग़ के परदे पर ***इमामुल मुताकल्लेमीन हज़रत अल्लामा मुफ़्ती नक़ी अली ख़ाँ अलैहिर्रहमा*** की इल्मी व फ़न्नी शानो शौकत के नुक़ूश नमूदार होते हैं। आप रईसुल मुताकल्लेमीन हैं, इक्तेसाब इल्मो फ़न आप ने अपने वालिदे माजिद हज़रत अल्लामा मुफ़्ती रज़ा अली ख़ाँ अलैहिर्रहमा से किया। आपको निस्बते बैअ़तो इरादत ख़ातिमुल अकाबिर हज़रत सय्यदना शाह आले रसूल अहमदी क़ादरी बरकाती मारहरवी अलैहिर्रहमा से हासिल हुई। आपने बेशुमार दीनी, मसलकी, इल्मी और

रूहानी कारनामे अंजाम दिये। आपका विसाल 1297 हि0 51 साल 5 महीने की उम्र में हुआ।

मंज़र नामा फिर बदलता है और अब पर्दा–ए–ज़हन पर रईसुल मुताकल्लेमीन हज़रत अल्लामा मुफ़्ती नक़ी अली ख़ाँ अलैहिर्रहमा के तीनों शहज़ादगान

(1) आला हज़रत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ फ़ाज़िले बरेलवी अलैहिर्रहमा।

(2) उस्ताज़े ज़मन हज़रत अल्लामा हसन रज़ा ख़ाँ बरेलवी अलैहिर्रहमा।

(3) हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद रज़ा ख़ाँ बरेलवी अलैहिर्रहमा का ज़माना–ए–ख़ैर व बरकत सामने आता है। यूँ तो आला हज़रत अलैहिर्रहमा के घराने में रूश्दो हिदायत, बैअ़तो इरशाद और फ़तवा नवेसी का सिलसिला आपके जद्दे अमजद सय्यदना मुफ़्ती रज़ा अली ख़ाँ अलैहिर्रहमा ही के ज़माने (1246 हि0/1831 ई0) ही से बाक़ायदगी के साथ जारी व सारी था जिसको आला हज़रत के वालिदे माजिद इमामुल मुताकल्लेमीन हज़रत अल्लामा मुफ़्ती नक़ी अली ख़ाँ अलैहिर्रहमा ने मज़ीद इस्तेहकाम बख़्शा मगर इमामे अहले सुन्नत सय्यदी सरकारे आला हज़रत रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने इसको निशाने इम्तेयाज़ अता फ़रमाया। अगर्चे इस अज़ीम ख़ानदान का माज़ी इन्तेहाई ताबनाक और तारीख़ साज़ रहा है मगर इसका शोहरा आला हज़रत अलैहिर्रहमा की ज़ाते बाबरकत से हुआ। सय्यदी सरकारे आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ अलैहिर्रहमा ने अपनी मुख़लिसाना दीनी व मज़हबी, मशरबी व मसलकी और इल्मी व रूहानी ख़िदमात के ज़रीये जहाँ बरेली शरीफ़ और इस ख़ानदान को निशाने इम्तेयाज़ बख़्शा वहीं ठोस सुन्नियत, ख़ुश अक़ीदगी और तसल्लुब फ़िद्दीन के लिये आपकी ज़ाते मुक़द्दसा निशाने इम्तेयाज़, मेयार और हक़ की कसौटी बन गयी।

आला हज़रत अलैहिर्रहमा आसमाने इल्मो फ़न और उफ़के हक़ीक़तो मआ़र्फ़त के ऐसे दरख़्शिंदा सूरज हैं कि जो अपने दामन में उलूमो हिकमत और मारफ़तो रूहानियत के न जाने कितने बद्रे कामिल

और रौशनो मुनव्वर सितारे समेटे हुये हैं। आप जहाँ एक तरफ़ नामूसे रिसालत के मुहाफ़िज़ व पासबान हैं वहीं एक सच्चे आशिके़ रसूल भी हैं। एक तरफ़ आप सिवादे आज़म जमाअ़ते अहले सुन्नत के मुबल्लिग़ो तर्जमान हैं तो दूसरी तरफ़ आप तबका–ए–सूफ़िया के सफ़ शिकन मुजाहिद भी हैं। आप ने जहाँ मज़हबे इस्लाम की सही तालीमात, सच्चे अफ़कारो नज़रयात, अक़ाइदे हक़्क़ा और मामूलाते सहीहा को अपने ख़ुदादाद इल्मो फ़न से मुदल्लल व मुबर्रहन फ़रमाया वहीं मज़हबे हनफ़ी का भी ज़ब्रदस्त इल्मी अंदाज़ में तहफ़्फ़ुज़ फ़रमाया। अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीबे पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के सदके़ उन्हें एक ख़ास मक़सद की तकमील के लिये पैदा फ़रमाया था। कुदरत की जानिब से मुजद्दिदयत के ताजे ज़र्री का आपको अतया भी मिला और असलाफ़े किराम के मुक़द्दस दीनी व मज़हबी और मशरबी हदफ़, मक़सूद, मतलूब और तहरीको मिशन की अज़ीम ज़िम्मेदारियाँ भी आपको तफ़वीज़ हुयीं। आप ने भी अपनी तमाम तर मज़हबी और मसलकी ज़िम्मेदारियों को पूरा करते हुये हर तरह के दुनियावी ऐशो आराम को तज कर उनकी अंजाम दही फ़रमाई जिसकी वजह से पूरी दुनिया–ए–इस्लाम के ख़ित्ते–ख़ित्ते के अवाम व ख़्वास की दीनी व शरअ़ई ज़रूरतों में आप उनके मरजा व मावा बन गये। अपने वक़्त की मशहूर व मारूफ़ शख़्सियात के दिलों को कुदरत की जानिब से उनके लिये मुसख़्ख़र कर दिया गया था। हर एक आप ही की ज़ुल्फ़ का असीर नज़र आता। जो मसअ़ला कहीं हल न होता उसके हल के लिये निगाहें आप ही की तरफ़ मरकूज़ होतीं। अजम से लेकर अरब तक हर जगह और हर ख़ित्ते के उलमा व मशाइख़ आपके उलूमो फुनून की बरकतों से मालामाल होते। एक–एक वक़्त में सैंकड़ों सुवालात आपके यहाँ जमा हो जाते। उलूम व फुनून के शायक़ीन इकतेसाबे फ़ैज़ करने के लिये परवाना वार आपके इर्द गिर्द जमा रहते, दर्स व तदरीस की महफ़िलें भी सजतीं और फ़िक्ह व फ़तावा का गुलिस्ता भी लहलहाता। मारफ़त व सुलूक के जाम भी तकसीम होते और इल्म व फ़न के मोती भी लुटाये जाते। बैअ़त व इरशाद के ज़रीये ख़ल्के ख़ुदा को अल्लाह व रसूल की सही तरीन मारफ़त का रास्ता भी

दिखाया जाता और मुबाहिसा व मुनाज़रे के ज़रिये एहक़ाक़े हक़ और इब्ताले बातिल करके अल्लाह व रसूल के दुश्मनों की सरकूबी भी की जाती। इन तमाम दीनी व मज़हबी और इल्मी व फ़न्नी कारनामों और ख़िदमात में आपके बिरादरे गिरामी उस्ताज़े ज़मन हज़रत अल्लामा हसन रज़ा ख़ाँ अलैहिर्रहमा, आपके छोटे भाई हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद रज़ा ख़ाँ अलैहिर्रहमा, आपके दोनों शहज़ादगान और आपके ख़ुलफ़ा व तलामिज़ा शाना ब शाना हर जगह आपके साथ नज़र आते ख़ास तौर पर उस्ताज़े ज़मन हज़रत अल्लामा हसन रज़ा ख़ाँ अलैहिर्रहमा ने आपको हर क़िस्म की घरेलू ज़िम्मेदारियों से बेफ़िक्र कर रखा था जिसका इज़हार इमामे अहले सुन्नत ने अपनी तहरीरों में भी फ़रमाया है।

नाम व नस्ब :-इमामुल मुताकल्लेमीन हज़रत अल्लामा नक़ी अली ख़ाँ अलैहिर्रहमा के तीन शाहज़ादे हैं:-

(1) आला हज़रत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ फ़ाज़िले बरेलवी अलैहिर्रहमा

(2) उस्ताज़े ज़मन हज़रत अल्लामा हसन रज़ा खाँ बरेलवी अलैहिर्रहमा

(3) हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद रज़ा खाँ बरेलवी अलैहिर्रहमा। (ख़ुसरे मोहतरम सरकारे मुफ़्ती ए आज़मे हिंद)

नबीर–ए–उस्तादे ज़मन, नवास–ए–आला हज़रत, ***हज़रत अल्हाज अश्शाह मुहम्मद उवैस रज़ा ख़ाँ अलैहिर्रहमा*** इसी अज़ीमुश्शान ख़ानदान के एक नेक और सादा लौह़ चश्मो चराग़ थे आपका सिलसिला–ए–नस्ब मंदरजा ज़ैल है:-

मुहम्मद उवैस रज़ा ख़ाँ बिन मौलाना मुर्तज़ा रज़ा ख़ाँ बिन हज़रत अल्लामा मौलाना हकीम हुसैन रज़ा खाँ (भतीजे व दामाद आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ) बिन बिरादरे आला हज़रत, उस्ताज़े ज़मन अल्लामा हसन रज़ा खाँ बिन रईसुल मुताकल्लेमीन हज़रत अल्लामा मुफ़्ती नक़ी अली ख़ाँ (वालिदे माजिद आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ) बिन हज़रत अल्लामा मुफ़्ती रज़ा अली खाँ बिन हज़रत अल्लामा हाफ़िज़ मुहम्मद काज़िम अली खाँ बिन शहज़ादा मुहम्मद आज़म खाँ बिन शहज़ादा शुजाअ़ते जंग सआ़दत यार खाँ बिन सईदुल्ला खाँ

कंधारी। जो कंधार खित्ता–ए–रूह के क़बीले बढ़ैच के एक अज़ीम और नामवर फ़रज़ंद थे।

आला हज़रत से पहला रिश्ता :—इस तरह साहिबे तज़करा हज़रत अल्हाज अश्शाह मुहम्मद उवैस रज़ा ख़ाँ अलैहिर्रहमा उस्ताज़े ज़मन हज़रत अल्लामा हसन रज़ा खाँ अलैहिर्रहमा के वास्ते से आला हज़रत अलैहिर्रहमा के परपोते हुए।

आला हज़रत से दूसरा रिश्ता :—आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत अश्शाह इमाम अहमद रज़ा खाँ फ़ाज़िले बरेलवी अलैहिर्रहतु वर रिज़वान के यहाँ दो शहज़ादों हुज्जतुल इस्लाम हज़रत अल्लामा अश्शाह मुहम्मद हामिद रज़ा खाँ, ताजदारे अहले सुन्नत सय्यदी सरकारे मुफ़्ती ए आज़म हिंद हज़रत अल्लामा मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा खाँ और पाँच शहज़ादियाँ (1) मुस्तफ़ाई बेगम (2) कनीज़ हसन (3) कनीज़ हुसैन (4) कनीज़ हसनैन (5) मुर्तज़ाई बेगम की विलादत हुई।

आला हज़रत की तीसरी शहज़ादी ***कनीज़ हुसैन*** की शादी बिरादरे आला हज़रत उस्ताज़े ज़मन हज़रत अल्लामा हसन रज़ा खाँ अलैहिर्रहमा के फ़र्ज़न्दे अर्जमन्द ***हज़रत अल्लामा हकीम हुसैन रज़ा खाँ अलैहिर्रहमा*** से हुई इनके तीन बेटे हुए।

(1) मौलाना मुर्तज़ा रज़ा खाँ (2) मौलाना इदरीस रज़ा खाँ (3) मौलाना जिरजीस रज़ा खाँ।

(आला हज़रत की इन शहज़ादी साहिबा का विसाल आला हज़रत के विसाल से 21 दिन के बाद हुआ)

हज़रत उवैस मियाँ साहब आला हज़रत के इन्हीं नवासे हज़रत मौलाना मुर्तज़ा रज़ा खाँ अलैहिर्रहमा के शहज़ादे हैं। इस तरह आप आला हज़रत के परनवासे हुए।

विलादत व तालीम व तरबियत :— हज़रत उवैस मियाँ साहब की विलादत मुहल्ला सौदागरान बरेली शरीफ़ आस्ताना ए आला हज़रत से मुत्तसिल मकान में 1933 ई0 को हुई।

यह भी एक इत्तेफ़ाक़ है कि जिस दिन आपकी विलादत हुई ठीक उसी दिन ताजदारे अहले सुन्नत सय्यदी सरकारे मुफ़्ती ए आज़म हिन्द रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु के शहज़ादे ***हज़रत मुहम्मद अनवर***

रज़ा खाँ अलैहिर्रहमा की भी विलादत हुई मगर कमसिनी ही में सरकारे मुफ़्ती ए आज़म हिंद के इन शहज़ादा ए गिरामी का विसाल हो गया चूँकि आप और हज़रत अनवर मियाँ साहब की उम्र में चंद घंटों ही का फ़र्क था इस वजह से हज़रत अनवर मियाँ के विसाल के बाद सरकारे मुफ़्ती ए आज़म हिंद और मादरे अहले सुन्नत पीरानी अम्मा साहिबा दोनों ही हज़रत उवैस मियाँ साहब से काफ़ी उन्सियत, लगाव व महब्बत फ़रमाते थे।

आपकी तालीम व तरबियत मुहल्ला सौदागरान ही में हुई। जब आपने शऊर की मंज़िले तय कर लीं तब आप ज़िला बदायूँ के ''करतौली'' नामी एक गांव में मुस्तकि़ल तौर पर सुकूनत पज़ीर हो गये यह वही गांव है कि जो ख़ानदाने आला हज़रत की मौरूसी जागीर में आता था। ख़ानवादा–ए–रज़विया के अक्सर बुज़ुर्गों ने इस गांव में रहकर काश्तकारी और ज़राअ़त की है। एक ज़माना वह भी आया जब ख़ानदान के ज़्यादातर अफ़राद ने अपनी ज़मीने फ़रोख़्त करके ''करतौली'' गांव को ख़ैराबाद कह दिया तब आप भी अपने बिरादरे अकबर हज़रत मुहम्मद बिलाल रज़ा खाँ साहब के साथ करतौली छोड़ कर एक जुलाई 1990 ई0 को क़स्बा बहेड़ी ज़िला बरेली के मुहल्ला शाहगढ़ में मुस्तकि़ल तौर पर सुकूनत पज़ीर हो गये और यहीं आपने अपनी ज़िंदगी की आख़री सांसें लीं वाज़ेह रहे कि हज़रत बिलाल रज़ा खाँ साहब का इंतेक़ाल मोहल्ला शाहगढ़ कस्बा बहेड़ी ज़िला बरेली में बतारीख़ 26 मोहर्रमुल हराम 1412 हि0 मुताबिक़ 8 अगस्त 1991 ई0 को हुआ और आप की तदफ़ीन मोहल्ला शाहगढ़ बहेड़ी की जामा मस्जिद से मुत्तसिल क़ब्रस्तान में हुई आप के तीन बेटे 1– मोहम्मद जलाल रज़ा खाँ, 2– मोहम्मद नजमी रज़ा खाँ, 3– मोहम्मद शहाब रज़ा खाँ और चार बेटियाँ हैं और इस वक़्त माशाल्लाह सब बाहयात हैं

ज़ियारते हरमैन तय्यबैन :– हर मुसलमान अपने दिल में ज़ियारते हरमैन तय्यबैन की तलब रखता है और आप तो फिर भी एक आशि़के रसूल के ख़ानदान से तअ़ल्लुक़ रखते थे। इस वजह से आपके दिल में भी आक़ा–ए–करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के रौज़ा–ए–मुक़द्दसा की ज़ियारत करने के साथ हज्जे

बैतुल्लाह की सआदत हासिल करने की सच्ची तड़प थी। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने आप पर करम फ़रमाया और आप 2006 ई0 में अपनी अहलिया–ए–मोहतरमा के साथ ज़ियारते हरमैन तय्यबैन के लिए हिजाज़े मुक़द्दस तशरीफ़ ले गये। हज्जे बैतुल्लाह और ज़ियारते रौज़ा–ए–अनवर से मुशर्रफ़ हुए।

क़िस्मत ने एक बार फिर यावरी फ़रमाई और आप इसी साल 5 जनवरी 2020 ई0 को अपनी अहलिया और अपने दो पोते मुहम्मद उज़ैर रज़ा खाँ और मुहम्मद कैफ़ रज़ा खाँ के साथ उमरे के लिये तशरीफ़ ले गये और ज़ियारते हरमैन शरीफ़ैन से मुशरर्फ़ हुए। 20 जनवरी 2020 ई0 को उमरा करके आप वापस हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाये उस वक़्त आप बिल्कुल सेहतमंद और तंदरूस्त थे। आपके पोतों का ब्यान है कि आप ने इंतेहाई नशात के साथ सारी ज़ियारते कीं और अरकाने उमरा पा पियादा (पैदल) अंजाम दिये। उमरे से वापसी के बाद ही से आपकी तबीयत नासाज़ रहने लगी। चूँकि आप इस वक़्त ख़ानदाने आला हज़रत में सबसे ज़्यादा उम्र दराज़ बुज़ुर्ग थे। एक तो कमज़ोरी और ऊपर से दराज़ी ए उम्र का तक़ाज़ा, इसलिये जब अलील हुए तो फिर सेहतमंद न हो सके।

आदात व अतवार :– आप के चेहरे, बुशरे, रहन–सहन और आदात व अतवार में सरकारे मुफ़्ती ए आज़म हिंद रदियल्लाहु तआला अन्हु का फ़ैज़, अमीने शरीअ़त हज़रत अल्लामा मुफ़्ती शाह मुहम्मद सिब्तैन रज़ा खाँ और सदरूल उ़ल्मा हज़रत अल्लामा मुहम्मद तहसीन रज़ा खाँ अलैहिर्रहमा की शबाहत झलकती थी। आप सौम व सलात के पाबंद थे। उमूमन आपकी जमाअ़त तर्क नहीं होती थी। आप अज़ीज़ व अक़ारिब और अहबाबों रिश्तेदारों की ख़ुशी और ग़म में शरीक़ होते, कोई बीमार हो जाता तो एयादत को तशरीफ़ ले जाते, इंतेक़ाल हो जाता तो नमाज़े जनाज़ा में शरीक होते। किसी के यहाँ शादी ब्याह या नज़्रो नियाज़ की कोई तक़रीब होती तो उसमें भी शामिल होते आप ख़ानवादा–ए–रज़विया के सारे बुज़ुर्गो और शहज़ादगान से नेहायत उलफ़त व महब्बत रखते और दीगर हज़रात भी आपसे उनसियत रखते यही वजह है कि जब आप अपने विसाल से पहले अय्यामे अ़लालत में

थे तो ख़ानवादा–ए–रज़विया के अक्सर बुज़ुर्गों और शहज़ादगान ने मुहल्ला शाहगढ़ बहेड़ी जाकर आपकी एयादत फ़रमाई।

उस्ताज़े ज़मन के कलाम पर फ़रेबतगी :– चूँकि आपका नस्बी तअ़ल्लुक़ उस्ताज़े ज़मन अल्लामा हसन रज़ा ख़ाँ अलैहिर्रहमा से है जिनका मंज़ूम कलाम पूरी दुनिया–ए–सुन्नियत में ज़ौक़ व शौक़ के साथ पढ़ा और सुना जाता है। यह ऐसा कलाम है कि जिसे मुजद्दिदे दीनो मिल्लत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ अलैहिर्रहमा भी बेहद पसंद फ़रमाते थे। इसी वजह से आप को भी अपने जद्दे अमजद के कलाम से एक ख़ुसूसी लगाव और तअ़ल्लुक़े ख़ातिर था। कोई भी महफ़िल होती आप फ़रमाइश करके उस्ताज़े ज़मन का कलाम ज़रूर पढ़वाया करते। घर के कमसिन शहज़ादों को कलामे उस्ताज़े ज़मन याद फ़रमाते और फिर फ़ुरसत के औक़ात में उन से सुना करते। आप के विसाल से चंद रोज़ पहले हुज़ूर साहिबे सज्जादा हज़रत अल्लामा अल्हाज अश्शाह मुहम्मद सुब्हान रज़ा ख़ाँ ''सुब्हानी मियाँ'' साहब मद्दाजिल्लहून नूरानी के भांजे नवासा–ए–रैहाने मिल्लत हज़रत अल्लामा सय्यद सैफ़ मियाँ साहब क़िब्ला जब एयादत के लिये आपके घर तशरीफ़ ले गये तो आप ने अपनी दिलकश और दिल फ़रेब आवाज़ में उस्ताज़े ज़मन हज़रत अल्लामा हसन रज़ा ख़ाँ अलैहिर्रहमा का कलाम आप को पढ़कर सुनाया।

इज़्देवाजी ज़िंदगी :– आप का अक़्दे निकाह ज़िला बदायूँ के फ़रीदपुर नामी गांव में रहने वाले ज़मींदार घराने के एक फ़र्द जनाब वजाहत ख़ाँ साहब की शहज़ादी मोहतरमा शब्बीर बानो साहिबा से 04 जून 1964 ई0 में हुआ।

औलाद :– आपके यहाँ 06 बेटों की पैदाईश हुई जिनके नाम यह हैं: (1)मुहम्मद मोहसिन रज़ा ख़ाँ (2) मुहम्मद शुऐब रज़ा ख़ाँ (3) मुहम्मद मुज्तबा रज़ा ख़ाँ उर्फ़ अनीस मियाँ (4) अब्दुर्रशीद रज़ा ख़ाँ (5) मुहम्मद जुनैद रज़ा ख़ाँ (6) मुहम्मद ज़ुबैर रज़ा ख़ाँ।

यह तमाम शहज़ादगान अल्हम्दुलिल्लाह सब के सब बक़ैदे हयात हैं और ख़ुशहाल ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं इनके अलावा आपके पसमांदगान में आपकी अहलिया–ए–मोहतरमा के अलावा 09 पौते

(1) मुहम्मद सुहेल रज़ा खाँ (2) मुहम्मद अनवर रज़ा खाँ (3) मुहम्मद हम्माद रज़ा ख़ाँ (4) मुहम्मद फ़ैज़ रज़ा खाँ (5) मुहम्मद कैफ़ रज़ा खाँ (6) मुहम्मद उज़ैर रज़ा खाँ (7) मुहम्मद अ़रीब रज़ा खाँ (8) मुहम्मद ज़ेहरान रज़ा खाँ (9) मुहम्मद अर्सलान रज़ा खाँ और 08 पोतियाँ हैं।

अ़लालत व विसाल :– हज़रत उवैस मियाँ साहब उमरे से वापस हिंदुस्तान जब तशरीफ़ लाये तब ही से अ़लील रहने लगे मगर आपकी यह अ़लालत तशवीश नाक नहीं थी अलबत्ता 01 अगस्त से आपकी यह अ़लालत तशवीशनाक हालत में पहुँच गयी और दिन ब दिन आप नहीफ़ और नातवाँ होते चले गये इस तरह तक़रीबन डेढ़ माह की अ़लालत के बाद 29 मोहर्रहमुल हराम 1442 हि0 18 सितम्बर 2020 ई0 बरोज़ जुमा शबे हफ़्ता को 87 साल की उम्र गुज़ार कर रात 09 बजकर 45 मिनट पर अपने मालिके हक़ीक़ी से जा मिले। यह वही 29 मुहर्रमुल हराम है कि जिसमें आपके वालिदे माजिद मौलाना मुर्तज़ा रज़ा खाँ अलैहिर्रहमा का विसाल हुआ था और बाद नमाज़े ईशा आपके इंतेक़ाल से कुछ देर पहले ही उनकी सालाना फ़ातेहा भी हुई थीं। मोहतरम जनाब अनीस भाई साहब ने बताया कि वालिदे गिरामी हमारे दादा जान मौलाना मुर्तज़ा अली खाँ अलैहिर्रहमा की सालाना फ़ातेहा निहायत एहतेमाम के साथ किया करते थे इसके लिये वह ख़ुद ही सुबह से सारे इंतेज़ाम करते थे यह भी एक इत्तेफ़ाक़ है कि बाप और बेटे दोनों की तारीख़े विसाल एक ही हो गयी।

नमाज़े जनाज़ा और तदफ़ीन :—कोविड–19 की पाबंदियों के बावजूद आपके आख़री दीदार और आपकी नमाज़े जनाज़ा में शिरकत करने वालों का एक अज़ीम मजमा हो गया। 30 मुहर्रमुल हराम 1442 हि0 19 सिम्बर 2020 ई0 बरोज़ हफ़्ता दोपहर 02 बजे बाद नमाज़े ज़ोहर आप की नमाज़े जनाज़ा अदा की गयी जिस में ख़ानदाने आला हज़रत के तक़रीबन सभी बुज़ुर्गों और शहज़ादगान ने शिरकत फ़रमाई। आस्ताना–ए–आला हज़रत पर आपकी नमाज़े जनाज़ा मरकज़े अहले सुन्नत जामिया रज़विया मंज़रे इस्लाम के साबिक़ शैख़ुल हदीस और जामियातुर्रज़ा बरेली शरीफ़ के मौजूदा शैख़ुल हदीस हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद स्वालेह साहब क़िब्ला रज़वी मद्दाज़िल्लहुन नूरानी ने अदा

कराई। आप के जनाज़े को आस्ताना–ए–आला हज़रत में ले जाया गया उसके बाद आस्ताना–ए–आला हज़रत से ख़ानदाने आला हज़रत के आबाई मक़बरे सिटी क़ब्रस्तान में ले जाया गया जहाँ बाद नमाज़े अस्र आपकी तदफ़ीन उसी मज़ार में हुई जिस के अंदर इस वक़्त आला हज़रत के दादा हज़रत अल्लामा मुफ़्ती रज़ा अली खाँ अलैहिर्रहमा, आला हज़रत के वालिदे गिरामी इमामुल मुताकल्लेमीन हज़रत अल्लामा मुफ़्ती नक़ी अली खाँ अलैहिर्रहमा, आला हज़रत की वालिदा–ए–मुकर्रमा आलिया ***हुसैनी ख़ानम*** अलैहिर्रहमा, बिरादरे आला हज़रत हज़रत अल्लामा हसन रज़ा खाँ अलैहिर्रमतु वर रिज़्वान और सरकारे मुफ़्ती ए आज़म हिंद के शहज़ादे हज़रत अनवर मियाँ साहब मदफून हैं। चूँकि आप अपने ख़ानदानी बुज़ुर्गों से बेपनाह महब्बत, उलफ़त और अक़ीदत रखते थे। शायद इसी वजह से कुदरत की जानिब से आपको जो आख़िरी आरामगाह मिली वह आपकी परदादी यानी आला हज़रत की वालिदा मोहतरमा मुकर्रमा के क़दमों के नीचे है। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त आपकी क़ब्र पर अनवारो रहमत की बारिशें नाज़िल फ़रमाये

कब्र की तैयारी में जनाब मुफ़्ती गुलाम मुस्तफ़ा साहब, सय्यद मुहिब्बुल रज़ा साहब, मुहम्मद असजद नफ़ीस साहब और मुहम्मद फरमान साहब ने काफ़ी मेहनत की। अल्लाह जज़ाए खैर बख्शे।

लंगरे आम–जब से आप की तदफीन सिटी कब्रस्तान में हुई है तभी से आप के फरज़न्दे गिरामी जनाब मुहम्मद शुऐब रज़ा खाँ साहब वहां हफ़्ते में तीन दिन (पीर, जुमेरात और हफ्ता) मिस्कीनों और ग़रीबों के लिए आम लंगर का एहतिमाम करते हैं। अल्लाह तआला जज़ाए खैर अता फरमाए।

उवैसे मिल्लत का विसाल मीडिया की नज़र में

आला हजरत के परपोते का विसाल

दो स्थानों पर हुई नमाजे जनाजा, सिटी स्टेशन कब्रिस्तान में किया सुपुर्दे खाक

बरेली (आज समाचार सेवा)। आला हजरत इमाम अहमद रजा खान के छोटे भाई उस्तादे जमन हजरत हसन रजा खान के परपोते, मदरसा मंजरे इस्लाम के आईटी हेड के वालिद हजरत उवैस रजा खान का लम्बी बीमारी के कारण बीती रात विसाल (निधन) हो गया वह बहेड़ी के रहने वाले थे और वर्तमान में वह आला हजरत खानदान के सबसे बड़े बुजुर्ग थे। उनके विसाल पर आला हजरत दरगाह प्रमुख हजरत सुब्हान रजा खां उर्फ सुब्हानी मियां तथा काजी-ए-हिन्दुस्तान हजरत असजद रजा खां ने गम का इजहार किया है। हजरत हसन रजा खां अपने पीछे छः बेटे छोड़ गये है। उनके सबसे बड़े बेटे जुबैर रजा खान मोहसिन रजा खां, अनीस रजा खान, शोएब रजा खान आदि है। बाद नमाज जोहर दो

दरगाह प्रमुख व काजी-ए-हिन्दुस्तान ने किया गम का इजहार

बजे के आस पास नमाजे जनाजा बहेड़ी में सय्यद आले रसूल ने अदा करायी। इसके बाद उनके जन्दे खाकी को अला हजरत दरगाह लाया गया और दोबारा नमाजे जनाजा पूर्व शेख उल हदीस मुफ्ती स्वालेह ने अदा करायी। इसके बाद आग के जनाजे को आला हजरत के आबाइ कब्रिस्तान सिटी स्टेशन में ले जाया गया। जहां सुपुर्दे खाक कर दिया गया। इस अवसर पर दरगाह आला हजरत के प्रमुख हजरत सुब्हान रजा खां, काजी-ए-हिन्दुतान असजद रजा खां, दरगाह के सज्जादा नशीन, हजरत अहसन रजा खां, खानकाहे तहसीनिया के सज्जादा नशीन, हजरत हस्सान रजा कादरी आदि मौजूद रहे और गम का इजहार करते हुए उन्हें खिराजे अकीदत पेश की और इसाले सवाब के लिए दुआ की। इस अवसर पर खानदाने आला हजरत के हजरत मन्नान रजा खां, मौलाना जमाल रजा खान, मौलाना अफरोज रजा कादरी, मौलाना तौकीर रजा खान, कारी तस्लीम रजा खान, अंजुम मियां, फिराज मियां, अदनान मियां, अब्दुल्ला मियां, मोहतिशिम रजा खान, मौलाना अनस रजा खां, मुफ्ती आकिल रजवी, मुफ्ती अजीजुर्र रहमान, मुफ्ती सलीम नूरी, मुफ्ती जमील, डा. एजाज अंजुम कारी अब्दुर्रहमान खान, नासिर कुरेशी तमाम अकीदतमंद बड़ी संख्या में मौजूद रहे।

अजय कुमार लल्लू और शिवपाल ने पेश की खिराजे अकीदत

जासं, बरेली : दरगाह आला हजरत खानदान के बुजुर्ग मोहम्मद उवैस रजा खां के निधन के बाद कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अजय कुमार लल्लू ने पत्र भेजकर गहरा दुख जताया। वहीं, प्रगतिशील समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष शिवपाल सिंह यादव ने फोन करके खिराजे अकीदत पेश की। उनका निधन 18 सितंबर की रात हुआ था।

दरगाह आला हजरत की आइटी सेल के मो. जुबैर रजा ने बताया कि कोविड-19 के चलते मंगलवार रात सोएम की रस्म (तीजा) सादगी से अदा की गई। दरगाह की आधिकारिक वेबसाइट पर ऑडियो का प्रसारण किया गया। फातिहाख्वानी में खानदाने आला हजरत से काजी-ए-हिंदुस्तान मौलाना असजद रजा खां कादरी, आइएमसी प्रमुख मौलाना तौकीर रजा खां, नबीरा-ए-आला हजरत कारी मोहम्मद तसलीम रजा खां, खानकाहे तहसीनिया के सज्जादानशीन मौलाना हस्सान रजा खां, शहर काजी मौलाना मुख्तार अहमद बहेड़वी आदि ने शिरकत की।

नबीरे आला हजरत उवैस रजा खान का विसाल

खानदान के सबसे बुजुर्ग थे उवैस रजा

बरेली। आला हजरत इमाम अहमद रजा खां के पोते नबीरे आला हजरत उवैस रजा खां का देर रात विसाल हो गया। शनिवार को उन्हें सुपुर्दे खाक किया जाएगा। हजरत उवैस रजा खां आला हजरत के छोटे भाई उस्तादे जमन हजरत हसन रजा खां के बेटे हैं। 87 वर्षीय उवैस रजा लंबे समय से बीमार चल रहे थे। शुक्रवार को देर रात उन्होंने आखिरी सांस ली। वह इस समय खानदान के सबसे बुजुर्ग थे और वो बहेड़ी में रह रहे थे। नबीरे आला हजरत अब्दुल्लाह रजा खां ने बताया कि शनिवार को दोपहर 1:50 बजे बहेड़ी में ही उनकी नमाजे जनाजा होगी। इसके बाद वहीं से सीधे बरेली लाया जाएगा। यहां सिटी स्थित आबाई कब्रिस्तान में उनको सुपुर्द ए खाक किया जाएगा।

बसपा कार्यालय में हुई शोकसभा

बरेली। आला हरजरत के परपोते उवैश रजा के निधन पर बसपा कार्यकर्ताओं ने शोक जताते हुए खिराजे अकीदत पेश की। सोमवार को बसपा के तुलसीनगर कार्यालय में शोक सभा का आयोजन किया गया। जिसमें आला हजरत खानदान के बुजुर्ग उवैश रजा खां के निधन पर शोक जताकर उन्हें याद किया गया। जिसमें मुफ्ती शकील बुलंदशहरी और जिया उल मुस्तफा ने उनकी मगफिरत की दुआ की। जिलाध्यक्ष डा. जयपाल सिंह, जिला उपाध्यक्ष अब्दुल कादिर, डा. इमरान अली, डा. आसिफ खान, सलामत खान, नवीन कश्यप, अंशु गंगवार समेत अन्य लोग मौजूद रहे।

दरगाह आला हजरत के बुजुर्ग शख्स सुपुर्द-ए-खाक

जासं, बरेली : आला हजरत खानदान के बुजुर्ग शख्स हजरत उवैस रजा खान का शुक्रवार देर रात बहेड़ी में निधन हो गया। उनकी नमाज-ए-जनाजा के बाद नमाज-ए-जोहर बहेड़ी में ही सय्यद आले रसूल ने अदा कराई। दरगाह प्रमुख सुब्हानी मियां व धार्मिक शख्सियतों ने शोक जताया। उनका पार्थिव शरीर दरगाह आला हजरत लाया गया। दोबारा नमाज-ए-जनाजा अदा कर शव को सिटी स्टेशन कब्रिस्तान में सुपुर्द-ए-खाक किया गया।

लोगों के बीच ही उर्स-ए-रजवी मनाया जाएगा। **संवाद**

उवैस रजा खां को पेश की खिराजे अकीदत

बरेली। नबीरे आला हजरत उवैस रजा खां के विसाल पर तुलसीनगर स्थित बसपा कार्यालय पर शोक सभा का आयोजन किया गया। इसमें मलालो गम का इजहार करते हुए उन्हें खिराजे अकीदत पेश की गई। इस मौके पर मुफ्ती शकील बुलंदशहरी एवं जिया उल मुस्तफा ने हजरत उवैस रजा खां की मगफिरत की दुआ करते हुए कहा कि रब्बे करीम उन्हें दरजात बुलंद अता फरमाए। शोक सभा में जिलाध्यक्ष डॉ. जयपाल सिंह, जिला उपाध्यक्ष अब्दुल कादिर, डॉ. इमरान अली, डॉ. आसिफ खान, सलामत खान, शहनवाज खां, विरासत खां, नवीन कश्यप, अंशु गंगवार आदि मौजूद थे। **संवाद**

उवैस रजा खां का विसाल, रंजो गम

बरेली। दरगाह आला हजरत से जुड़े नासिर कुरैशी ने बताया कि आला हजरत इमाम अहमद रजा खान के छोटे भाई उस्तादे जमन हसन रजा खान के परपोते व मदरसा मंजरे इस्लाम के आईटी हेड जुबेर रजा खान के वालिद उवैस रजा खान का शुक्रवार की रात लंबी बीमारी के चलते बहेड़ी में विसाल हो गया था।

इस वक्त वो खानदाने आला हजरत के सबसे बुजुर्ग शख्स थे। उनका जनाजा बरेली दरगाह आला हजरत लाया गया। नमाजे जनाजा मुफ्ती स्वालेह ने अदा करायी। सिटी स्टेशन वाले कब्रिस्तान में सुपुर्दे खाक किया गया। दरगाह प्रमुख सुब्हानी मियां, क़ाजी ए हिदुस्तान मुफ्ती असजद रजा खान, सज्जादानशीन मुफ्ती अहसन रजा कादरी, खानकाहे तहसीनी के सज्जादानशीन मौलाना हस्सान रजा कादरी ने खिराज पेश करते हुए इसाले सवाब किया। खानदान ए आला हजरत के मन्नान रजा खान, मौलाना जमाल रजा खान, मौलाना अफरोज रजा क़ादरी, मौलाना तौकीर रजा खान थे।

हजरत ओवैस रजा खान का इंतकाल, दरगाह प्रमुख सुब्हानी मियां ने किया गम का इजहार

प्रमुख संवाददाता

बरेली। हजरत उवैस रजा खान सुपर्दे खाक। दरगाह प्रमुख सुब्हानी मियां व काजी, हिंदुस्तान ने किया रंज-ओ-गम का इजहार। आला हजरत इमाम अहमद रजा खान के छोटे भाई उस्ताद ए जमन हजरत हसन रजा खान के परपोते व मदरसा मंजर ए इस्लाम के आईटी हेड जुबैर रजा खान के वालिद हजरत उवैस रजा खान का कल रात लंबी बीमारी के चलते बहेड़ी मे देर रात विसाल हो गया था। इस वक्त वो खानदान ए आला हजरत के सबसे बुजुर्ग शख्स थे। आप अपने पीछे 6 बेटे छोड़ गए है। जुबैर रजा खान के अलावा मोहसिन रजा खान, अनीस रजा खान, शोएब रजा खान आदि। आज उनकी नमाज-ए- जनाजा बाद नमाज-ए-जोहर 2 बजे बहेड़ी में सय्यद आले रसूल ने अदा



करायी।

इसके बाद उनको बरेली दरगाह आला हजरत लाया गया। यहाँ दोबारा नमाज-ए-जनाजा पूर्व शेख उल हदीस मुफ्ती स्वालेह साहब ने अदा करायी। आपको आला हजरत के अबाई (खानदानी) सिटी स्टेशन वाले कब्रिस्तान में गमगीन माहौल में सुपर्दे खाक किया गया। दरगाह सरपरस्त मौलाना सुब्हान रजा खान (सुब्हानी मियां) हिंदुस्तान मुफ्ती असजद रजा खान (असजद मियां) दरगाह आला हजरत के सज्जादानशीन मुफ्ती अहसन रजा कादरी (अहसन मियां) खानकाह ए तहसिनिया के सज्जादानशीन मौलाना हस्सान रजा कादरी ने खिराज पेश करते हुए रंज ओ गम का इजहार कर इसाले सवाब किया।

इस मौके पर खानदान ए आला हजरत के हजरत मन्नान रजा खान, मौलाना जमाल रजा खान, मौलाना अफरोज रजा कादरी, मौलाना तौकीर रजा खान, कारी तस्लीम रजा खान, अंजुम मियां, सिराज मियां, अदनान मियां अब्दुल्ला मियां, मोहतिशिम रजा खान, मौलाना अनस रजा खान, मुफ्ती आकिल रजवी, मुफ्ती अजीजुर्रहमान, मुफ्ती सलीम नूरी, मुफ्ती जमील, डॉक्टर एजाज अंजुम, कारी अब्दुर्रहमान खान, नासिर कुरैशी आदि लोग मौजूद रहे।

अमर उजाला

हजरत उवैस रजा के सोयम का किया गया लाइव प्रसारण

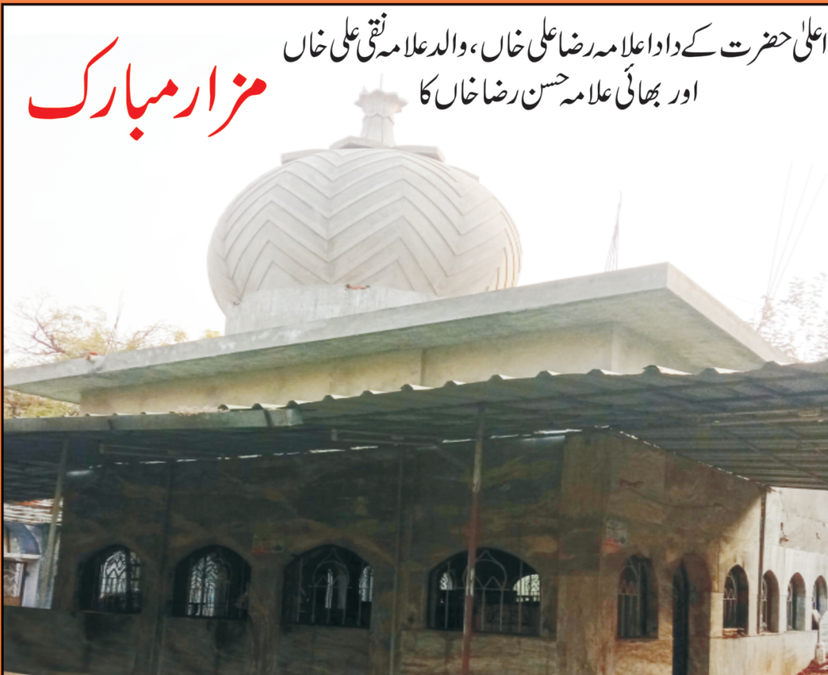
बरेली। हजरत उवैस रजा खां के सोयम चंद लोगों की मौजूदगी में मनाया गया। अलबत्ता इस कार्यक्रम का लाइव ऑडियो प्रसारण किया गया। जिसमें बड़ी संख्या में लोग शरीक हुए। दरगाह आला हजरत की आईटी सेल के हेड मोहम्मद जुबैर रजा खां ने बताया कि कोविड-19 के चलते सोयम की रस्म बहुत ही सादगी के साथ अदा की गई। सामाजिक दूरी का ख्याल रखते हुए इसका लाइव प्रसारण दरगाह आला हजरत की वेबसाइट पर किया गया। ताकि लोग अपने अपने घरों पर सोयम के कार्यक्रम को सुन सकें। फातेहाख्वानी में खानदाने आला हजरत से काजी ए हिंदुस्तान मुफ्ती असजद रजा खां कादरी, मौलाना तौकीर रजा खां, कारी तस्लीम रजा खां, खानकाह तहसीनिया के सज्जादानशीन मौलाना हस्सान रजा खां, समनानी मियां सहित तमाम लोगों की शिरकत रही। **संवाद**

हजरत उवैस रजा खां के विसाल पर कांग्रेस व प्रसपा ने जताया अफसोस

बरेली। नबीरे आला हजरत उवैस रजा खां के विसाल पर कांग्रेस व प्रसपा के बड़े नेताओं ने अफसोस जाहिर किया है। उन्हें महान शख्सियत बताते हुए खिराजे अकीदत पेश की है। इस संबंध में कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अजय कुमार लल्लू ने पत्र भेज कर गहरे रंजो गम का इजहार किया है। इस पत्र को लेकर कांग्रेस के प्रदेश सचिव चौधरी असलम मियां व इंजीनियर अनीस अहमद उनके निवास पर पहुंचे थे। जहां उन्होंने हजरत उवैस रजा के पुत्रों मोहसिन रजा खां, शुएब रजा खां, अनीस रजा खां, रशीद रजा खां और जुबैर रजा खां से मुलाकात कर शोक पत्र सौंपा। इसी तरह प्रगतिशील समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष शिवपाल सिंह यादव ने फोन पर बात करके हजरत उवैस रजा खां के विसाल पर अफसोस का इजहार करते हुए खिराजे अकीदत पेश की। **ब्यूरो**

مزار مبارک

اعلیٰ حضرت کے دادا علامہ رضا علی خاں، والد علامہ نقی علی خاں
اور بھائی علامہ حسن رضا خاں کا





United Printers Bareilly # 9319622303